# ज्ञानामृत

मई, 1987 वर्ष 22 ❋ अंक 11 मूल्य 1.50

• नोबल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा के इंदौर आगमन पर नगरनिगम इंदौर द्वारा नागरिक अभिनंदन के अवसर पर ब्रह्माकुमारी विमला उन्हें ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए।

• कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित 'डिवेलपमैंट' पर सम्मेलन के खुले अधिवेशन में संबोधित करते हुए ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र जी।

**बंगलौर**-ब्रह्माकुमार जगदीश जी मुख्य प्रवक्ता ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय तथा मुख्य सम्पादक ज्ञानामृत, कर्नाटक के शिक्षामंत्री को ईश्वरीय संदेश देते हुए।

**गुहाटी**-महामण्डलेश्वर स्वामी वेद व्यासानंद जी को ब्र.कु. शीला ईश्वरीय सौगात देते हुए।

**देहली**-राजयोग भवन के तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रो. एस. सम्पत (चेयरमैन आर.ए.सी. रक्षा मंत्रालय) अपने विचार व्यक्त करते हुए।

**दिल्ली (शक्तिनगर)** सेवाकेंद्र की ओर से मुकर्जी नगर में हुई आध्यात्मिक प्रदर्शनी को लायंस क्लब के डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गर्वनर भ्राता सतीजा जी तथा रोटरी इंटरनेशनल के मैनेजर भ्राता कपूर जी को चित्रों का स्पष्टीकरण देते हुए ब्रह्माकुमारी सुधा जी।

**भुवनेश्वर**-भ्राता निरंजन पटनायक, उड़ीसा के उद्योग, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री के सेवाकेंद्र पर पधारने पर ब्र.कु. संदेशी उन्हें श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

फरीदाबाद में 'अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह' के उपलक्ष्य में आयोजित सम्मेलन में मंच पर (बाएं से) ब्र.कु. शुक्ला जी, ब्र.कु. आनंदकिशोर जी, भ्राता आर.के. तनेजा मुख्य प्रशासक फरीदाबाद, ब्र.कु. आशा, भ्राता आर.आर. फूलिया अतिरिक्त उपायुक्त तथा ब्र.कु. ऊषा जी विराजमान हैं।

अमृतसर-ब्र.कु. राज भारतीय जनता पार्टी के नेता डॉ. बलदेव प्रकाश को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

जलपाईगुड़ी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डी.के. नन्दा जी, ब्र.कु. कानन, स्वदर्शन, केसर तथा वीणा साथ में हैं।

जामनगर-सर्वधर्म सम्मेलन का उद्घाटन करती हुई ब्र.कु. सुषमा बहिन।

माउंट आबू:जैन तेरा पंथ के आचार्य तुलसी जी की शिष्याएं साध्वी के समूह के साथ दादी जानकी जी।

ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय के मुख्यालय, आबू पर्वत पर 'एकता वर्ष' तथा 'सर्व के सहयोग से नए विश्व की स्थापना' कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने हेतु मीटिंग में भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारे ब्र.कु. बहन-भाईयों का ग्रुप फोटो।

# अमृत-सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| १. योगी जीवन | ..... १ | १०. मनचलदास और मतलबी दोस्त | .....१३ |
| २. व्यवहार की श्रेष्ठता (सम्पादकीय) | ..... २ | ११. मीठे बाबा का मीठा मधुबन | .....१६ |
| ३. 'एकता'—सफलता की कुंजी | ..... ५ | १२. चैतन्य फूलों की निर्माण वाटिका आध्यात्मिक छात्रावास | ..१८ |
| ४. गीत | ..... ७ | १३. स्वमान से श्रेष्ठ स्थिति | .....२१ |
| ५. सम्बंध और बंधन | ..... ८ | १४. समय की गति | .....२२ |
| ६. अद्भुत नक्शा | ..... ९ | १५. यदि आप सदा जीवन में आगे बढ़ना चाहते हो तो | .....२४ |
| ७. वेद कालीन संगीत का आध्यात्मिक रहस्य | .....१० | १६. प्रगति का बाधक—भय | .....२६ |
| ८. इतनी चाहता है बाप तुमसे | .....११ | १७. आध्यात्मिक सेवा-समाचार | .....२९ |
| ९. दुश्मन कौन ? | .....१२ | १८. पहेली हल करो तो जानें | .....३२ |


# योगी जीवन

योग न तो प्राणायाम और आसनों का नाम है, न ही दिन-भर में केवल एक-दो घण्टे अभ्यास करने की कोई कठिन क्रिया है बल्कि यह तो निरन्तर ईश्वरीय लग्न,स्वरूप चिन्तन,हृदय-परिवर्त्तन अथवा ईश्वरीय स्मृति में स्थिति ही का नाम है। यह तो एक जीवन-कला है अथवा जीवन को ज्ञान-युक्त रीति से परमपिता परमात्मा के अर्पण करके उस ही के प्रेम तथा नियम के अनुसार चलाने का नाम है। अतः योगी का तो सारा जीवन ही न्यारा होता है।

वह प्रातः सो कर जब उठता है तो जैसे सांसारिक रीति के अनुसार बच्चे अपने माता-पिता को 'नमस्ते' कहते हैं,वैसे ही वह सबसे पहले आत्मा के माता-पिता परमात्मा की स्मृति में स्थित होता है, उस ही को हार्दिक धन्यवाद देता है, मानो उससे मनोमिलन मनाता अथवा मन में उससे बातें करता है। फिर वह नहा-धोकर एक-डेढ़ घण्टे के लिये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में जाता है जहाँ पर कि कक्षा (Class) में ईश्वरीय ज्ञान सुनता तथा योग-निष्ठा का अभ्यास करता है। पश्चात वह जब घर लौट कर भोजन करता है तब भी परमप्रिय परमपिता परमात्मा की याद में टिक कर मानो ईश्वर को भोग लगा-लगा कर उसी के स्नेह ही में तथा शरीर से न्यारा एवं साक्षी होकर भोजन लेता है। इसी प्रकार वह दफ़्तर में कर्त्तव्य कार्य करते हुए भी अपने उस **सच्चे साहिब** अथवा प्रीतम प्रभु को नहीं भूलता और जब-कभी अवकाश मिलता है तब फिर विशेष रूप से योग द्वारा आनन्दित होता है। वह चलते-फिरते,उठते-बैठते व्यर्थ के संकल्पों में समय नहीं गँवाता बल्कि मन को परमात्मा रूपी ठिकाने पर लगाये रखता है और ज्ञान-रूपी सीढ़ी पर उतारता-चढ़ाता रहता है। पुनः वह रात्री को घर के सभी सदस्यों के साथ ज्ञान-चर्चा करता, दिनचर्या पर दृष्टि डालता तथा परमात्मा की स्मृति में टिकता है और रात्री को सोने से पहले फिर उस पतित-पावन, मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता, पिता परमात्मा को मानसिक प्रणाम अर्थात हृदय से याद करके विश्राम करता है। इस प्रकार 'योग' मानो ईश्वरीय स्मृति में टिक कर जीवन को ईश्वर की आज्ञा के अनुसार चलाने का नाम है।इस से मनुष्य निश्चिन्त, आनन्दित, पवित्र तथा आत्मिक शक्ति सम्पन्न अनुभव करता है और अन्ते मुक्ति तथा जीवन्मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

# व्यवहार की श्रेष्ठता

ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स कर लेने के बाद और योग की विधि सीख लेने के पश्चात् तथा दिव्य गुणों के महत्व को भी समझ लेने के अनंतर व्यवहार की श्रेष्ठता आने में बहुत लोगों को समय लग जाता है । दूसरों के सम्पर्क में आने पर अथवा विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में से गुज़रने पर मनुष्य कर्म, अकर्म, विकर्म की गति को जानते हुए भी व्यावहारिक श्रेष्ठता की कसौटी पर ठीक नहीं उतरता । व्यवहार के परिवर्तन की प्रक्रिया एक अलग ही पहलू है जिसमें बहुत-से लोग कमज़ोर पाये जाते हैं । अभद्रता, अशिष्टता, असंतुलन, असहयोग, अनबन, खिन्नता, चिड़चिड़ापन, असामञ्जस्य (Lack of adjustment) असहिष्णुता आदि-आदि उनके व्यवहार में झलकते रहते हैं जो पर-पीड़ा का और अपनी अशांति का नितांत कारण बने रहते हैं।

प्रश्न उठता है कि व्यवहार की इन सब त्रुटियों का कारण क्या है ? श्रेष्ठ बनने की कामना करने वाला व्यक्ति भी निकृष्ट व्यवहार क्यों कर बैठता है ? एक बार अभद्र व्यवहार करने के पश्चात् मन में पश्चात्ताप होने पर भी मनुष्य उस अभद्रता की गुलामी से क्यों नहीं छूट पाता ? आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद योगी-कुल-उचित, राजकुल-उचित या देवकुल-उचित व्यवहार करना चाहते हुए भी उसका व्यवहार इनमें से किसी भी मर्यादा के अनुसार न होकर जो व्यथा देने और लेने वाला हो जाता है, उसकी वजह क्या है ?

इस संसार में प्राय: व्यवहार के लिए मनुष्य की तीन श्रेणियां बनाई जाती हैं:—

१. पहले श्रेणी अपने से बड़ों के साथ व्यवहार से सम्बंधित है।

२. दूसरी समतल, सम आयु अथवा सम स्तर के लोगों से व्यवहार की श्रेणी है और

३. तीसरी अपने से छोटों की श्रेणी है।

वास्तव में एक-दो और श्रेणियां जिनका प्राय: वर्णन नहीं किया जाता, भी जरूरी हैं । उनमें से एक वर्ग अथवा संस्था का दूसरे के साथ जो व्यवहार होना चाहिए, उससे सम्बंधित श्रेणी है और एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के साथ क्या व्यवहार होना चाहिए, उससे सम्बंधित श्रेणी है । इन सब से भी ऊपर जो सारे जगत के परमपिता परमात्मा हैं, उनके साथ मनुष्य का क्या संबंध और व्यवहार होना चाहिए, वह प्रश्न अलग है। वास्तव में मनुष्य का परमात्मा से जो संबंध है, जब वह टूट या बिगड़ जाता है और परमात्मा के प्रति आज्ञा पालन और समर्पण भाव न होने से जब मनुष्य के व्यवहार में त्रुटि आती है, तभी उसके अन्य सभी व्यवहार भी उत्तम की बजाए, मध्यम अथवा कनिष्ठ हो जाते हैं ।

यदि हम मनुष्य के समस्त व्यवहारों का विश्लेषण करें तो हम देखेंगे कि स्वार्थ और अहम् भाव ही सभी संघर्षों का मूल है । आज यदि दो राष्ट्र एक-दूसरे का विरोध करते हैं और एक-दूसरे से बचाव के लिए युद्ध की तैयारी करते हैं तो अवश्य ही उनके परस्पर विरोध के मूल में दोनों के स्वार्थों का टकराव है। आज यदि दो संस्थाएं भी एक-दूसरे का खंडन करती हैं अथवा दो धार्मिक सम्प्रदाय या राजनीतिक दल एक-दूसरे के प्रति वैर, घृणा, द्वेष आदि से रंगा हुआ व्यवहार करते हैं तो उनके इस निकृष्ट व्यवहार के मूल में भी अहम् भाव और स्वार्थपरता का अस्तित्व ही है। "मैं ठीक हूं, दूसरा गलत है, उसे अपने को ठीक करना चाहिए"—इस प्रकार का दृष्टिकोण तथा "हमारी मांगें पूरी करो" अथवा "हमारी यह आवश्यकता पूरी होनी चाहिए, हमने दूसरों का कोई ठेका थोड़े ही लिया है; वे जाने उनकी बला से"—इस प्रकार की कट्टर स्वार्थपरता संसार में मानव-मानव के बीच दुख को पैदा करने वाली एक नकारात्मक (negative) प्रवृत्ति है। व्यापार में इसी के कारण से शोषण है । दो देशों के बीच इसी से लड़ाई पैदा होती है । धार्मिक सम्प्रदायों के बीच इसी से दंगे और फसाद होते हैं । राजनीतिक दल इसी के वशीभूत होकर आपस में खींचातानी करते हैं और इसी से ही पारिवारिक जीवन में तोड़-फोड़ होती है और बढ़ते-बढ़ते एक दिन ऐसा उत्पात होता है कि बसी हुई आबादियां एक दिन श्मशान बन जाती हैं । एकता को भंग करने वाली, असहयोग की भावना को जन्म देने वाली, कटु आलोचना के लिए उकसाने वाली, ईर्ष्या और द्वेष की आग को भड़काने वाली, प्रेम को निर्बीज करके उसके स्थान पर घृणा फैलाने वाली ये दो प्रवृत्तियां—स्वार्थ और अहम् भाव—ऐसी हैं जिन्होंने स्वर्ग को नर्क और महकते बगीचों को जलते हुए जंगलों में परिवर्तित किया है । इन्हीं से ही संसार में लूटमार का बाजार गर्म है । आज इन्हीं से ही अलगाव का नारा बुलंद है । हर आए दिन जो हम मारकाट का समाचार पढ़ते हैं, उस रक्त-भरी दास्तान की कथावस्तु का केंद्र बिंदु यही दो प्रवृत्तियां हैं । आज संसार के लिए यही राहु

और केतु हैं जिन्होंने ही इन्सान को इन्सानियत से गिराया है और करुणा, दया, क्षमा, सहयोग, सहिष्णुता, भ्रातृत्व, त्याग आदि मूल्यवान मानवीय गुणों को धूलि-धूसरित कर दिया है।

कई बार मनुष्य का स्वार्थ अथवा अहम् भाव बाहर से बहुत ही चमत्कृत, अलौकिक अथवा सुंदर रूप ले लेता है। दूसरे शब्दों में स्वार्थ अथवा अहम् भाव रूपी काले भूत मन को मोहित करने वाली अप्सरा अथवा देव का रूप ले लेते हैं । मनुष्य समझता है कि अमुक कार्य करने से मैं संसार की सेवा कर सकूंगा परंतु उसके पीछे भावना अपने मान और शान के बढ़ावे की होती है अथवा दूसरों से होड़ (competition) करके उनको मात (defeat) करने की होती है और इस दुर्भावना से मनुष्य दिव्य धारणाओं और मर्यादाओं को तोड़ने के लिए उद्यत हो जाता है क्योंकि यह तथाकथित (so called) सेवा उसके अहम् भाव व स्वार्थ की भूख के लिए निवाले का काम करती है । 'नाम कितना सुंदर है—सेवा !' परंतु उसके पीछे भाव सेवा का नहीं अर्थात् त्याग, उत्सर्ग, परोपकार, अनुकम्पा, कृपालुता का नहीं बल्कि अपने को किसी क्षेत्र में प्रतिष्ठा की चोटी पर पहुंचाने का होता है—चाहे उसके लिए दूसरों के अधिकारों को अपने पांव तले रौंदते हुए चलना पड़े, न्याय की बजाए अन्याय की नीति अपनानी पड़े और त्याग की बजाए हड़पने की अवधारणा अपनानी पड़े।

जीवन काल में शुभलक्ष्य की ओर बढ़ता हुआ मानव चलते-चलते त्याग और परोपकार के पथ से हटकर, अधिकारों आकांक्षाओं, उपाधियों एवं लौकिक उपलब्धियों को बटोरने में लग जाता है और इस प्रकार सात्विकता, साधना, सादगी, सद्भावना एवं सद्व्यवहार से विपरीत दिशा ले लेता है । उसका परिणाम स्वतः स्पष्ट है ।

थोड़ा बड़ा होने पर, कुछ उपलब्धि हो जाने पर अथवा कुछ अधिकार प्राप्त कर लेने पर मनुष्य इतना उन्मत और मद-मस्त हो जाता है कि वह बड़ों को पूछना, उनका सम्मान करना अथवा उनसे आदर युक्त व्यवहार करना भूल जाता है । ऐसा करने से वह स्वयं को ही बड़ों के आशीर्वाद से वंचित करता है—उसे यह सुधि भी नहीं रहती जो उसके समतल है, उन्हें देखकर प्रसन्न होने की बजाए, उन्हें शुभकामनाएं देने की अपेक्षा वह उन्हें परास्त अथवा पीछे करने का यत्न करने लगता है—उसे यह ख्याल ही नहीं रहता कि ऐसे व्यवहार से वह स्वयं ही सबके मन से पीछे हट रहा है । वह अपने से छोटों के साथ दबाव, अनादर, आतंक शुष्क अथवा अभद्र व्यवहार कर लेता है और उसे यह मालूम ही नहीं होता कि वह अपने मित्रों को शत्रु, अपने प्रशंसकों को आलोचक, सहयोगियों को विरोधी और साथियों को सामना करने वाली उलट नीति को अपना रहा है । दैवी नीति की बजाए वह इस कलियुगी तमोगुणी नीति को अपनाता है कि छोटों को रोब से दबाकर, बड़ों को मार्ग से हटाकर और समतल वालों को पटाकर चलना ही आगे बढ़ना है।

मनुष्य स्वयं तो दूसरों से ऐसा व्यवहार कर लेता है परंतु जब दूसरे उससे ऐसा व्यवहार करते, तब उसे यह खलता है । दूसरों के ऐसा व्यवहार करने पर वह उनसे रुष्ट अथवा खिन्न हो जाता है और जगह-जगह कहता-फिरता है कि फलां मनुष्य कैसे निकृष्ट स्वभाव का है कि वह हमसे अभद्र व्यवहार करता है गोया वह स्वयं तो खोटा सिक्का नहीं लेना चाहता, दूसरों को जाली नोट देकर ठगने के लिए झट से तैयार हो जाता है ।

अतः व्यवहार को श्रेष्ठ बनाने के लिए मनुष्य को एक तो यह सोचना चाहिए कि यदि मुझसे कोई ऐसा व्यवहार करे तो मुझे वह कैसा लगेगा ? दूसरे, उसे यह याद रखना चाहिए कि जैसा व्यवहार मैं करूंगा मुझे वैसा करते देखकर और लोग भी यदि वैसा करने लगेंगे, तो परिवार का, संस्था का, समाज का, राष्ट्र का अथवा विश्व का क्या हाल होगा—संसार में खलबली, दुर्व्यवस्था, अनाचार और कशमकश बढ़ेगी, तनाव को बढ़ावा मिलेगा या उससे शांति, प्रेम, मित्रता और सद्भावना का वातावरण बनेगा ? इन दोनों बातों को सामने रखने से मनुष्य का व्यवहार दिनोंदिन श्रेष्ठ बन सकता है ।

इस पर भी यदि यह याद रखा जाए कि योगी कुलभूषण के क्या लक्षण होने चाहिएं, होनहार देवता की क्या नीति होनी चाहिए अथवा भविष्य में स्वराज्यपद पाने वाले को किस मर्यादा का पालन करना चाहिए या स्वयं को ईश्वरीय संतान निश्चय करने वाले व्यक्तियों में किन ईश्वरीय गुणों की झलक मिलनी चाहिए तो मनुष्य श्रेष्ठ व्यवहार के मार्ग पर सतत आगे बढ़ता जायेगा ।

याद रहे कि जो दूसरों को क्षमा नहीं करेगा धर्मराज उसे भी क्षमा नहीं करेगा; जो परोपकार नहीं करेगा उसका अपना भी उपकार अथवा उद्धार नहीं होगा । जो उदारचित्त बनकर दूसरों को खुश नहीं करेगा, उसका अपना चित्त भी खुशी के खजाने से वंचित रहेगा । जो दूसरों को आतंकित अथवा अपमानित करेगा, उसका भले ही कोई कुछ समय भयवश मान करे परंतु न उसकी अपनी अन्तरात्मा उसे सम्मान योग्य मानेगी और न उसे लोग सच्चे मन से उसे सम्मान योग्य समझेंगे। जो दूसरों की उन्नति का अवसर देगा, उसकी अपनी भी उन्नति होगी; जो दूसरों को बढ़ते हुए देख खुश होगा, उसकी खुशी की बेल सदा

हरी-भरी रहेगी और वृद्धि को प्राप्त होगी । अत: यह जो उक्ति है कि—"युक्ति से मुक्ति मिलती है"—यह इसी पर चरितार्थ होती है । छोटों को स्नेह देने, बड़ों को सम्मान और समतल वालों को साथ देना तथा सभी को सद्भावना—यही युक्ति है जिससे मुक्ति मिलती है, यही नीति है जिससे प्रीति बढ़ती है, श्रेष्ठ व्यवहार की यही नींव है।

—जगदीश

देहली की उपमहापौर के अफ्रीकन एवेन्यू रोड स्थित सेवाकेंद्र पर एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्मलित होने के लिए आने पर ब्र.कु. विनोद उन्हें आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए।

ऋषिकेश उप-सेवाकेंद्र का उद्घाटन करते हुए स्वामी देवेंद्र स्वरूप ब्रह्मचारी जी।

जालंधर-रामनवमी के उपलक्ष्य में निकाली गई स्वर्णिम युग की झांकी का दृश्य।

हरिनगर (देहली)-नवरात्रों के अवसर पर केंद्र के प्रांगण में लगाई गई चैतन्य देवियों की झांकी।

जालंधर में रामनवमी के अवसर पर शोभा यात्रा का दृश्य।

खारीबावली (देहली) आध्यात्मिक कार्यक्रम में सांसद भ्राता जयप्रकाश अग्रवाल ने शिवध्वजा रोहण किया।

# "एकता"

# सफलता की कुंजी

—बी.के. सूरज कुमार , माउंट आबू

**तो आओ एकता वर्ष (१९८७) में, हम सभी भगवान के सपूत भगवान को अपने सुदृढ़-संगठन का सुबूत दें, ताकि उसे भी अपने सपूतों पर गौरव हो। अपने किसी भी स्वार्थ का सहर्ष त्याग कर दें यह त्याग ही हमारी बुद्धिमानी होगी। सभी ज़िम्मेदारी सम्भालने का गुण धारण करें। स्वयं भी महान् बनें व दूसरों को भी महानता की नज़र से देखें। तो हमारा यह संगठन संसार में एक आदर्श प्रस्तुत करेगा और अब तक असंभव माने जाने वाले कार्यों को हम कुशलतापूर्वक हंसते-हंसते पूर्ण कर सकेंगे।**

भगवान ने सम्पूर्ण विश्व को बदलने का दायित्व जिन शक्तिशाली आत्माओं को दिया है, उनकी सफलता का रहस्य उनकी एकता की शक्ति है । भगवान गुप्त रूप से कैसे संसार को बदल रहा है और किस तरह रहस्यमयी विधि से वह आसुरी सम्प्रदाय का संहार करा देता है—ये राज केवल उसके योगी वत्स ही जानते हैं । उसने शिव-शक्तियों व पाण्डवों की एक आध्यात्मिक बल से सुसज्जित रूहानी सैना तैयार की है, जिसमें सतयुग व त्रेता के विश्व के राज्य-अधिकारी महान् विभूतियां विद्यमान हैं, जो एक साथ मिलकर रावण शत्रु से युद्ध कर रहे हैं । कितना सुखद आश्चर्य है कि एक ही साथ अनेक विश्व-महाराजा, विश्व-महारानी व शक्तिशाली आत्माएं पुनः विश्व में अपना दैवी स्वराज्य स्थापित कर रही हैं और इससे भी महान् आश्चर्य कि उनमें परस्पर एकता है । विश्व की महान् आत्माओं का यह संगठन विश्व में अनुपम है, अद्वितीय है । इनकी समता करने का साहस विश्व के किसी भी संगठन को नहीं हो सकता ।

ये अलौकिक सेना ५० वर्ष से एकता के सूत्र में बंधकर इस दिव्य कार्य को सम्पन्न करती चली आ रही हैं । अपने को मालिक समझने वाले हज़ारों लोग एकता में सम्बद्ध हैं । जिनके पास पवित्रता व योग का बल हो, वे ही संगठन को एकता के सूत्र में बांधने में सक्षम हैं । प्रस्तुत चर्चा में हम एकता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेंगे । ताकि इस संगठन से जुड़ने वाली नई आत्माएं भी एकता को मज़बूत करें और बहुत समय से चली आ रही आत्माएं इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए संगठन-शक्ति को कमज़ोर होने से बचायें।

### एकता को तोड़ना—ईश्वरीय कार्य में विघ्न

यदि कोई मनुष्य अज्ञानवश या जानबूझकर संगठन को कमज़ोर करता है, तो उसे स्वयं को ईश्वरीय कार्य में विघ्न डालने वाला समझना चाहिए और उसे उसके भावी परिणाम पर विचार करके स्वयं को संभालना चाहिए । एक ज्ञानवान व्यक्ति को चाहिए कि यदि उसके कारण संगठन कमज़ोर पड़ता है तो वह स्वयं को अंतर्मुखी बना ले । परंतु कई मनुष्य यहीं पर गलती करते हैं कि वे स्वयं को समझते तो हैं सहयोगी और बने रहते हैं विरोधी । और उनकी यह विरोध-भावना उनके लिए व संगठन के लिए घातक सिद्ध होती है। जो ऐसा करता है, वह सदा ही ईश्वरीय सहयोग पाने से वंचित रहता है।

### एकता में बल है—

यह सत्य तो सदा से ही प्रसिद्ध है, परंतु तो भी जहां-तहां संगठनों में परस्पर एकता का भारी अभाव पाया जाता है । परंतु हमारा यह ईश्वरीय संगठन सदा सुदृढ़ है क्योंकि यहां परम सत्ता साथ है, सभी का एक ही लक्ष्य है तथा सभी में अपनत्व की भावना है और मैं-पन का त्याग है।

यदि किसी टीम के सभी खिलाड़ी शक्तिशाली व अनुभवी हों परंतु उनमें परस्पर मन-मुटाव हो, एकता न हो तो उनकी हार निश्चित है । और दूसरी टीम में यदि खिलाड़ी कम अनुभवी भी हों, परंतु एकता का बल हो तो उसकी विजय के अधिक अवसर होते हैं । यह एकता केवल बाह्य नहीं, वरन् मानसिक भी हो । जहां एकता है, वहां बल बहुत बढ़ जाता है। क्योंकि वहां कोई किसी पर कटाक्ष नहीं करता, वहां कोई किसी को पीछे नहीं धकेलता और वहां कोई किसी का वैरी भी नहीं होता । इस प्रकार यदि किसी संगठन के सभी मनुष्यों के संकल्प भी समान हों तो उससे बड़ा बल अन्यत्र कहीं नहीं।

सर्व विदित है कि भारत के राजाओं में एकता के अभाव ने विदेशियों को भारत पर बार-बार आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया । और यह भी सत्य है कि यदि भारत के ४-५ राजा भी मिल गये होते तो भारत का दमन करने का साहस स्वप्न में भी किसी को न होता । तो अनेकता के कारण हमने भारत को दरिद्र बनाया । अब इतिहास से शिक्षा लेकर हम अपनी गलतियों को सुधारें। हम कभी न भूलें कि **जहां एकता है, वहीं विजय है।**

### एकता के बल से समय व धन की बचत—

जहां एकता की शक्ति है तो विशाल कार्य भी हंसते-हंसते सम्पन्न हो जाते हैं । वहां परस्पर अति स्नेह का वातावरण रहता है, फलस्वरूप वहां सभी स्वयं को जिम्मेदार समझते हैं । और यदि एकता की शक्ति कम है तो वही कार्य डबल समय व अधिक धन के व्यय से पूर्ण होता है। इस सत्य, संकल्प-शक्ति के सिद्धांत को प्राय: लोग कम ही समझ पाते हैं कि जहां संकल्पों में परस्पर सामन्जस्य है, वहां कार्य अति शीघ्र व बिना कठिनाइयों व विघ्नों के ही सम्पन्न हो जाता है।

मान लो किसी संगठन को एक विशाल भवन बनाने का काम सौंपा जाता है। यदि वहां आपस में टकराव है तो सभी का उमंग-उत्साह व सर्वस्व लगा देने का संकल्प ढीला हो जाता है, फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति गैर-जिम्मेदार हो जाता है, वह कठिनाइयों से कतराने लगता है और वह मकान ६ मास के बजाए १० मास लेता है व धन का व्यय भी कम-से-कम ३०% बढ़ जाता है। और इस प्रकार ऐसे कार्य करने वालों को किसी भी प्रकार के ईश्वरीय बल का या जीवन में उन्नति का अनुभव नहीं होता ।

### स्वार्थ-एकता में बाधक

जहां भी संगठन की शक्ति कमज़ोर पड़ती है, सूक्ष्मता से देखा जाए तो वहां कोई-न-कोई स्वार्थ ही मुख्य कारण होता है। फिर वह स्वार्थ चाहे मान-शान का हो या अन्य किसी प्रकार का । और जो मनुष्य संगठन की एकता के लिए अपने स्वार्थ का भी त्याग न कर सके, उसे बुद्धिमान व महान् कहना मूर्खता ही होगी । ऐसा मनुष्य कभी भी अपने महान् लक्ष्य को नहीं पा सकेगा । अत: अब सभी को चाहिए कि केवल अपने को महत्व न दें, बल्कि संगठन की शक्ति को ही सम्पूर्ण महत्व दें।

जहां स्व: की भावनाओं का व इच्छाओं का त्याग है, वहीं संगठन शक्तिशाली है । जहां निस्वार्थ भाव से सभी सेवाओं में जुटे हैं वही संगठन सत्य अर्थों में ईश्वरीय संगठन है । क्योंकि वास्तव में सेवा, वही सच्ची सेवा है जहां निस्वार्थ भावना हो । कामना-वश की गई सेवा न तो सेवा ही कहलाती और न ही फलदायक होती । और वास्तव में **ऐसी सेवा करने से तो सेवा न करना अधिक श्रेष्ठ है**। क्योंकि जो सेवा ईश्वरीय सेवा में विघ्न रूप बने, ऐसी सेवा से भला भगवान कहां प्रसन्न होते हैं ।

### मेरी ही बात मानें—यह भावना गलत

यह भावना संगठन को भारी कर देती है। इससे सभी के कदम ठंडे पड़ जाते हैं, मानो पैर भारी हो जाते हैं । परंतु हां यदि आप अपनी मान्यताओं को दूसरों से मनवाना ही चाहते हैं तो अपने स्वरूप को इतना महान् बना लें जो आपके विचारों को सभी सत्कार सहित स्वीकार कर लें। इसके बिना—अर्थात् यदि आप ईश्वरीय शक्तियों से खाली हैं तो अपनी मान्यताओं को दूसरों पर थोपना, संगठन को निराश करना होगा और यदि आप समझदार हैं तो कृपया ऐसा न करें।

**जिम्मेदार व्यक्ति को चाहिए कि अहम् व वहम् से भी मुक्त रहे और रोब से राज्य न करे। नम्रता का कवच पहनकर स्नेह व सत्कार के हथियारों से काम ले। क्योंकि किसी का भी रोब संगठन में रोष पैदा करता है, फलत: संगठन टूटने लगता है। इस प्रकार जिम्मेदार व्यक्ति यदि अपनी सभी सूक्ष्म ज़िम्मेदारियों को महसूस कर ले और सभी को परखकर तदानुसार ही उनसे व्यवहार करे तो वह संगठन-शक्ति का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। परंतु यदि दूसरों की क्षमताओं को बिना परखे ही वह उन घोड़ों को कोड़े लगाता रहेगा, तो अंतत: उसे ही उनकी लातों की मार सहन करनी पड़ेगी।**

### श्रेष्ठ भावनाएं—एकता का आधार

हम ईश्वरीय पथ के राही हैं । हमारी श्रेष्ठ भावनाएं ही हमारी महानता है । और जहां संगठन में सभी को ऊंची नज़र से देखा जाता है, वहां संगठन परस्पर एकता व स्नेह के सूत्र में बंधा रहता है । परंतु यदि कोई व्यक्ति स्वयं को मालिक, दूसरों को नौकर, स्वयं को इंचार्ज दूसरों को सेवक या इसी प्रकार का भेदभाव पूर्ण व्यवहार रखता है तो उसका संगठन सदा ही उसके लिए सिरदर्द बना रहेगा । और जिस दिन उसके मन में सभी के लिए समानता का भाव अर्थात् महानता का भाव जागृत हो जाता है उसी दिन से सभी लोग उसके पूर्ण सहयोगी बनकर संगठन को अति शक्तिशाली बना देते हैं । इसलिए निमित्त व्यक्ति को चाहिए कि वह सभी की महानताओं को महत्व दे।

### एकता के लिए जिम्मेदार कौन ?

एकता कायम करने की जिम्मेदारी संगठन के प्रत्येक सदस्य की है। प्रत्येक को चाहिए कि वे व्यर्थ को बढ़ावा न दें, टीका-टिप्पणी, व्यर्थ प्रचार, अहम् और वहम् से परे रहें। साथ-साथ संगठन की एकता का सर्वाधिक आधार उसका नेता अर्थात् जो निमित्त इंचार्ज है, वही है। यदि उसके अपने संकल्पों में ही एकता नहीं होगी, यदि वे स्वयं पर ही नियंत्रण नहीं रखते होंगे तो एकता कायम करना उनके वश की बात नहीं।

अत: जिम्मेदार व्यक्ति को चाहिए कि अहम् व वहम् से भी व मुक्त रहे और रोब से राज्य न करे। नम्रता का कवच पहनकर स्नेह व सत्कार के हथियारों से काम ले। क्योंकि किसी का भी रोब संगठन में रोष पैदा करता है, फलत: संगठन टूटने लगता है। इस प्रकार जिम्मेदार व्यक्ति यदि अपनी सभी सूक्ष्म जिम्मेदारियों को महसूस कर ले और सभी को परखकर तदानुसार ही उनसे व्यवहार करे तो वह संगठन-शक्ति का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। परंतु यदि दूसरों की क्षमताओं को बिना परखे ही वह उन घोड़ों को कोड़े लगाता रहेगा, तो अंतत: उसे ही उनकी लातों की मार सहन करनी पड़ेगी।

**पवित्रता का बल—एकता का बल—**

निमित्त आत्मा में यदि पवित्रता का सर्वश्रेष्ठ बल है तो यह बल संगठन को अधिक बलवान बनायेगा क्योंकि पवित्रता शीतलता व नम्रता की भी जननी है और जहां ये दो विशेषताएं है, वहां सभी खुशी से स्वयं को समर्पित कर देते हैं । और जहां सभी लोग अपने सर्वोच्च लक्ष्य को पाने में संलग्न हों, जहां मात्र सेवा ही लक्ष्य न हो, वरन् सेवा द्वारा ईश्वरीय उन्नति का लक्ष्य हो, जहां सभी एक की ही श्रीमत् पर कुर्बान होने को आतुर हों, वहां संगठन की एकता का बल अति प्रबल है, उसे कोई आसुरी शक्ति हिला भी नहीं सकती ।

**विशाल दिल—संगठन शक्ति का आधार—**

एक सत्य नियम है कि किसी भी संगठन में १०% लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें कुछ भी कहने की या सिखाने की आवश्यकता नहीं होती, वे पूर्ण योग्य व बुद्धिमान होते हैं । दूसरे लगभग १०% लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें कुछ कहने या सिखाने से कुछ लाभ नहीं होता, उनका विकास अवरुद्ध हो चुका होता है। शेष लोगों में से अधिकतर विकासशील प्रकृति के होते हैं । यदि उन्हें प्रोत्साहन मिले, यदि उन्हें प्रेरणाएं दी जाएं, यदि उन्हें कुछ सिखाया जाए तो वे बहुत उन्नति कर लेते हैं । इसी तरह किसी भी कार्य में ५% तो वेस्ट होता ही है । अत: इस ५% को नगण्य मानकर दूसरी ओर ध्यान देना चाहिए ।

इसी प्रकार के अन्य विचारों से स्वयं का विशाल दिल बनाकर संगठन में एक विशाल दृष्टिकोण अपनायें । जो पहले ही योग्य हैं, उन्हें डिस्टर्ब करने की आवश्यकता नहीं और जो अयोग्य हैं, उनके लिए चिंता करने की ज़रूरत नहीं और जो विकासशील हैं उन्हें प्रोत्साहन दें तो संगठन एकता के बल से सदा सु-सज्जित रहेगा और हमारी एकता कभी भी अनेकता में विभाजित नहीं होगी ।

तो आओ एकता वर्ष (१९८७) में, हम सभी भगवान के सपूत भगवान को अपने सुदृढ़-संगठन का सुबूत दें, ताकि उसे भी अपने सपूतों पर गौरव हो। अपने किसी भी स्वार्थ का सहर्ष त्याग कर दें यह त्याग ही हमारी बुद्धिमानी होगी। सभी जिम्मेदारी सम्भालने का गुण धारण करें। स्वयं भी महान् बनें व दूसरों को भी महानता की नज़र से देखें। तो हमारा यह संगठन संसार में एक आदर्श प्रस्तुत करेगा और अब तक असंभव माने जाने वाले कार्यों को हम कुशलतापूर्वक हंसते-हंसते पूर्ण कर सकेंगे। □

## गीत

**ले.-ब्र.कु. मोहन., अमृतसर**

आ ई रे प्रभात ले बाबा को साथ
उठो री प्रिय आत्मन
जागो री प्रिय आत्मन
फरिश्तों को संग-संग
बाबा है पधारे
प्रीतम से कर मिलन

धरती पुकारे जागो शिव के प्यारे
छुप गये चांद-सितारे
पलकें खोलो देखो जरा तुम
बाबा की झलक दिखाये

अमृतवेले बाबा गुण रतन लुटाये
खोल के झोली तू भर ले
ब्रह्म मुहूर्त में खोल के आंखें
बाबा से शक्ति तू पा लें
फरिश्तों के..... □

**धर्म और कर्म दो बने जीवन-सुकान,**
**दोनों में समता सधे, मानव बने महान्।**

**चिंता तन-मन को जलाती है इसलिए**
**चिंता छोड़कर परमात्म-चिंतन कीजिए।**

# सम्बन्ध और बन्धन

—ले.-ब्र.कु. सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

यदि हम संसार की सुख और दुख की कथा-उपकथा पर विचार करें तो हम देखेंगे कि इसमें मानवीय संबंधों का विशेष महत्व है । संबंधों के बिना व्यवहार ही नहीं हो सकता और न कर्तव्य-अकर्तव्य की चर्चा हो सकती है और न ही जीवन में प्रेम नाम की कोई चीज रह जाती है । भक्ति मार्ग में लोग श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम इसीलिए कहते हैं कि श्रीराम ने भाई, पुत्र, पति, पिता, राजा आदि सभी संबंध मर्यादापूर्वक निभाये । अतः मर्यादायुक्त व्यवहार अथवा अमर्यादायुक्त व्यवहार आदि की बात भी संबंधों ही के प्रसंग में की जा सकती है । इस प्रकार, संबंधों के बिना तो मानव-जगत की कल्पना ही नहीं की जा सकती है । दूसरे शब्दों में, जिसे हम 'संसार' कहते हैं, वह संबंधों ही का ताना-बाना है; संबंधों के बिना संसार टिक ही नहीं सकता ।

परंतु मर्यादा और अमर्यादा, धर्म और अधर्म, पवित्रता और अपवित्रता ऐसे तत्व हैं जिनसे कि संबंधों का सौंदर्य बनता है अथवा इनकी विकृति होती है । यदि पवित्रता हो तो वही संबंध सुख देने वाले और यदि अपवित्रता हो तो वही संबंध दुख देने वाले बन जाते हैं । उदाहरण के तौर पर घर में पुत्र का होना सुख का साधन माना जाता है । कहा जाता है कि पुत्र 'कुल का दीपक' होता है, 'घर का चिराग' होता है, 'बुढ़ापे की लाठी' होता है अथवा 'कुटुम्ब की शोभा' होता है । परंतु यदि पुत्र कपूत हो तो वही घर के चिराग को बुझाने वाला, कुल को कलंकित करने वाला, घर को तबाह करने वाला, कुटुम्ब को उजाड़ने वाला और बुढ़ापे का अभिशाप तथा रात-दिन की पीड़ा बन जाता है । खून-पसीने से कमाई सम्पत्ति को वह नष्ट करने का निमित्त बनता है अथवा रात-दिन माता-पिता के लिए चिंता-रूपी चिता का कारण बन जाता है । अगर बच्चा शराब, कबाब, जुआ, कुसंग, व्यसनों और विकारों का गुलाम हो तो वह दुर्योधन – जैसा महाभारत को रचकर विध्वंस एवं सर्वनाश का कारण बन जाता है । यदि बच्चा अच्छा हो, आज्ञाकारी हो, सेवा-भाव वाला हो, मातृ-स्नेही एवं पितृ-स्नेही हो तो वह श्रवण कुमार की तरह माता-पिता का सहारा और उनके मन का दुलारा बन जाता है । यही बात पत्नी के बारे में भी कही जा सकती है । यदि पत्नी केकई-जैसी हो तो बस घर में कुहराम मच जाता है और यदि वह सावित्री-जैसी हो तो यमराज भी उसकी बात को मानता है ।

कहने का भाव यह है कि यह सुख-दुख का सारा खेल संबंधों ही की शुद्धि-अशुद्धि की धुरी पर एक चक्र की न्यायीं घूमता है । ये संबंध हैं तो जरूरी क्योंकि इनके बिना जीवन में कोई रस ही नहीं रह जाता है और कुछ भी करने को नहीं रहता । परंतु यदि इन संबंधों के बीच काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, स्वार्थपरता आदि प्रवेश कर जाते हैं तब ये संबंध 'संबंध' न रहकर बंधन बन जाते हैं । इनसे मनुष्य दिनोंदिन अधिकाधिक कर्मों—नहीं...नहीं...विकर्मों के बंधन में जकड़ता चला जाता है । यदि माता-पिता और पुत्र के संबंध में मोह आ जाए तो वह दुखदायक, चिंता का उत्पादक और अशांतिकारी हो जाता है । यदि पति-पत्नी एक-दूसरे के देह में अनुरक्त हो जाएं और विषय-वासना पर आधारित संबंध जोड़ लें तो वही उनके लिए नर्क का द्वार बन जाता है । यदि सखा-सखा के बीच जुआ, शराब अथवा अन्य कोई व्यसन आ जाएं तो वही 'कुसंग' कहलाता है। यदि व्यापारी और ग्राहक के बीच मिलावट, चोर-बाज़ारी आदि आ जाए तो उसे 'भ्रष्टाचार' का नाम दिया जाता है । यदि प्रजा सरकार की बात न माने तो उसे 'उपद्रवकारी' अथवा अराजकता फैलाने वाली माना जाता है और यदि सरकार प्रजारंजक और प्रजापालक न होकर मारपीट करने वाली हो तो उसे अत्याचारी, और परपीड़क कहा जाता है । इस प्रकार समाज में जितने भी संबंध हैं, उनमें जब किसी भी विकार का समावेश हो जाता है तो वही संबंध सुखदायी की बजाए दुखदायी संबंध अर्थात् बंधन का रूप ले लेते हैं ।

वास्तव में देखा जाए तो युगों का विभाजन—सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग और पुरुषोत्तम संगम युग—संबंधों ही के आधार पर बना है । सतयुग में परस्पर संबंधों में दिव्यता, शालीनता, प्रेम और सद्भावना होती है । अर्थात् जब संबंधों में ये सद्गुण होते हैं तभी यह संसार सतयुग कहलाता है । त्रेता युग में उसमें थोड़ा अंतर आने लगता है। द्वापर युग में उन संबंधों में विकृति अथवा मलीनता शुरू होती है और कलियुग में उन्हीं संबंधों का पतन होता है । कलियुग के अंत में तो इनमें अमर्यादा और तमोगुण पूरी तरह छा जाता है। इसी को ही 'धर्म-

ग्लानि कहा जाता है। धर्म-ग्लानि के समय परमात्मा का अवतरण होता है और तभी परमपिता परमात्मा ज्ञान-योग और दिव्य गुणों की शिक्षा देते हैं ताकि फिर से जो संबंध, निकृष्ट बन गये थे, उनमें श्रेष्ठता आ जाए । वे आत्माओं के सभी संबंध अपने से युक्त करके फिर से इन संबंधों को शुद्ध करते हैं । इसी का ही दूसरा नाम 'पवित्रता' है । संगम युग में हम इसी रीति-से अपने संबंधों को सुधारते हैं ।

अत: हमें यह मालूम रहे कि ईश्वरीय ज्ञान हमें संबंधों या संबंधियों को छोड़ने के लिए नहीं कहता बल्कि इनमें जो विकृति आ गयी है, उसे मिटाने के लिए कहता है । जब हम अपने अंतिम जन्म के अंतिम काल में अपने सभी आत्मिक संबंध परमात्मा के साथ जोड़ते हैं और अन्य सभी संबंधों में भी आत्मिक नाते को मुख्यता देते तथा विकारों को हटाते हैं तो फिर जन्म-जन्मांतर के लिए हमारे संबंधों में दिव्यता आ जाती है । उन्हीं संबंधों की दिव्यता के कारण ही हम 'देवी-देवता' कहलाते हैं और यह संसार देव युग अथवा कृत युग कहलाता है।

इस प्रकार वर्तमान समय हमारे इस पुरुषार्थ के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है । हमें अब बंधन-सम बने संबंधों में से विकारों को मिटाना है । मनुष्यों से नाता नहीं तोड़ना बल्कि विकारों से नाता तोड़ना है और प्रभु से जो नाता टूट चुका था, उसे फिर से जोड़ना है । देह-अभिमान को अपने संबंधों का आधार न बनाकर आत्मा के अविनाशी नाते पर अपने स्नेह को अविनाशी बनाना है । संगम युग में जीवन-परिवर्तन की अथवा पुरुषार्थ की यही नीति है। □

# अद्भुत नक्शा

**प्रीतमलाल अश्क, पश्चिम विंहार , नयी दिल्ली**

एक अजनबी मानुष ने आ मुझे स्वप्न में बतलाया था।।
एक रोज मैं बाद दोपहर अपने कमरे में सोया था
भूल रहा था सुध-बुद्ध सारी सपनों में खोया था
सपने में उस मानुष ने इक नक्शा मुझको दिखलाया था...
मुझे स्वप्न...

मुझसे बोला प्यारे बच्चे आ तुझ को इक भेद बताऊं
आदिकाल की इस सृष्टि का नक्शा तुझको आज दिखाऊं
पांच हजार वर्ष पहले का नक्शा मुझको पकड़ाया था...
मुझे स्वप्न...

अजब तरह के इस नक्शे में केवल भारत ही भारत था
धर्मों पर था खण्ड न कोई सब का सब जल में गारत था
इंग्लैंड, इटली, चीन, जर्मनी, अमरीका न बच पाया था...
मुझे स्वप्न...

फ्रांस, जापान, कनॉडा, हंगरी फिलिपाइन सारे का सारा
तिब्बत, बर्मा आधा एशिया भारत का था अहम् किनारा
पूरा अन्डेमान जजीरा इसमें साफ नजर आया था...
मुझे स्वप्न...

इस नक्शे में भारत की भी अद्भुत शान निराली देखी
जड़ चेतन सब मर्यादा में जीवन में खुशहाली देखी
सुख सम्पूर्ण वैभव पाकर मेरा मन भी हर्षाया था...
मुझे स्वप्न...

नहीं देश में था कोई थाना नहीं जेल की चारदीवारी
एक बाप के बच्चे सारे नहीं पूज्य और नहीं पुजारी
धर्म-जात भाषा का झगड़ा नहीं किसी ने फैलाया था...
मुझे स्वप्न...

जूंही जरा गौर से देखा मेरे सिर भी ताज धरा था
मोती-पन्ना और जवाहर हीरे मानक लाल जड़ा था
देख-देखकर इस नक्शे को मेरा मस्तिष्क चकराया था...
मुझे स्वप्न...

नक्शा मुझे दिखाकर बोला ओ मतवाले भोले बच्चे
तेरा रूप अनूप यही था तुम थे मर्यादा के पक्के
तन-मन-धन तेरा हत्याने माया ने ही बहकाया था...
मुझे स्वप्न...

आ मेरी गोदी में आ जा मैं हूं सच्चा बाप तुम्हारा
फिर से इस पदवी को पाले जो है निज अधिकार तुम्हारा
सफल मनोरथ करने को फिर ज्ञान योग भी सिखलाया था...
मुझे स्वप्न...

आदि अंत का भेद बताकर फिर वह अंतर्ध्यान हुआ था
उसी समय दृढ़ निश्चय होकर मैंने यह ऐलान किया था
मेरा तो विश्वास है प्रीतम वह तो परमपिता आया था...
मुझे स्वप्न... □

# वेद कालीन संगीत का आध्यात्मिक रहस्य

—लेखक: ब्र.कु. व्ही. जे. वराड पांडे, दमोह

१. संगीत शास्त्र के विद्वानों का यह मत है कि वैदिक काल में संगीत का प्रचार था । अवश्य ऋग्वेद में मृदंग, वीणा, बंशी, डमरू आदि वाद्य-यंत्रों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में एक संस्कृत श्लोक भी है "नृत्यमनो अमृता" जिसके आधार पर उनका यह भी मत है कि वैदिक काल में गायन के साथ-साथ नृत्य कला भी प्रचलित थी । कहते हैं देवता सोमरस पान कर नृत्य करते थे, इसलिये उनके मतानुसार संगीत और नृत्य वैदिक काल में था।

२. प्रचलित मान्यता के अनुसार श्रीकृष्ण के काल में भी नृत्य, रासलीला होती थी और स्वयं श्रीकृष्ण ऐसी मुरली बजाते थे कि गोप-गोपियां सुध-बुध भूलकर मुरली सुनने के लिये पागलों की भांति दौड़ पड़ती थीं। श्रीकृष्ण को संगीत का महान् पंडित भी माना जाता है। विद्वानों का मत है कि महाभारत काल का संगीत उत्तमता की पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था। श्रीकृष्ण की मुरली में जादू था यह तो सर्वसमान्य मान्यता है । विद्वान तो यहां तक कहते हैं कि श्रीकृष्ण जैसा बंशी वादक आज तक विश्व में कहीं उत्पन्न नहीं हुआ । संगीतज्ञों का यह भी मत है कि श्रीकृष्ण के अतिरिक्त अर्जुन भी संगीत के महान् विद्वान थे । कहते हैं जैसे श्रीकृष्ण बंशी बजाने में अपना कोई प्रतिद्वंदी नहीं रखते थे, ऐसे वीर अर्जुन भी वीणा वादन में अपना कोई प्रतिद्वंदी नहीं रखते थे । इधर सरस्वती को भी वीणा वादिनी,वीणा पुस्तक धारिणी, साहित्य की अधिष्ठात्री देवी,ज्ञान की देवी आदि द्वारा महिमा की जाती है । किंतु अर्जुन वीणा वादक होते हुये उसके हाथ में वीणा के बजाए तीर-कमान दिखाया जाता है।

३. सबसे पहिले तो यह स्थापित करना होगा कि इस मानव सृष्टि का इतिहास कब से शुरू होता है और कब खत्म होता है । सारी सृष्टि का काल चार युगों में बंटता है । कल्प की आयु के विषय में और प्रत्येक युग के आयु के विषय में मत मतान्तर पाये जाते हैं । मनुस्मृति, महाभारत और सूर्य सिद्धांत नामक मूल ग्रंथों में कलियुग की आयु १२०० वर्ष, द्वापर की आयु २४०० वर्ष, त्रेता की आयु ३६०० वर्ष और सतयुग की आयु ४८०० वर्ष बताई गई । इस प्रकार चारों युगों को मिलाकर एक कल्प की आयु १२००० वर्ष बताई गई है। गणितज्ञ लोग समझते हैं कि संसार अनादि अविनाशी होने से संसार का इतिहास एक चक्र के रूप में या वृत्त के रूप में है। सतयुग और त्रेता युग सतोगुणी सृष्टि कहलाती है इसके विपरीत गुण वाली सृष्टि द्वापर और कलियुग है जहां सतोगुण नहीं होता । अत: इतिहास चक्र दो विपरीत सृष्टियों में बंट जाता है। रेखा गणित के सिद्धांत के अनुसार यदि इतिहास चक्र को दो विरोधी गुणों वाले भागों में बांटना चाहें तो हमें उसमें एक व्यास खींचना पड़ेगा क्योंकि सतोगुण और तमोगुण ये दोनों व्यास विरुद्ध (DIAMETRICALLY Opposite) गुण हैं । अत: व्यास खींचने पर सतयुग और त्रेता युग की आयु का जोड़ द्वापर और कलियुग की आयु के जोड़ के बराबर होना चाहिए । इतिहास वृत्त को चार युगों में विभाजित करने के लिए उसे दो व्यासों से बांटना होगा इसलिये वह इस प्रकार होंगे कि जिससे चार बराबर खंड बनें । प्रसिद्ध स्वस्तिक ( 卐 ) भी इसी रहस्य का परिचय देता है। "स्वस्तिक" की रेखाओं से युगों की सम आयु का जो स्पष्टीकरण मिलता है वह तर्कयुक्त और विवेकयुक्त मालूम होता है । अत: निष्कर्ष यह निकला कि जितनी कलियुग की आयु अर्थात् १२०० वर्ष मानी गई है उतनी प्रत्येक युग की आयु मानना चाहिए । इस प्रकार एक कल्प की आयु ४८०० वर्ष हुई ना कि १२००० वर्ष ।यदि हम अन्य ग्रंथों और वेदांग ज्योतिष पर विचार करें तो कल्प की आयु ५००० वर्ष निकलती है । अब इस अति धर्म ग्लानि के समय परमात्मा का अवतरण हो चुका है और यह ईश्वरीय सत्य की घोषणा हो चुकी है कि सृष्टि की आयु ५००० साल है । संगीत की उत्पत्ति शास्त्रों के अनुसार वैदिक काल से जोड़ी गई है। वैदिक काल अर्थात् वह काल जब वेद वाणी अर्थात् ईश्वरीय वाणी हुई अर्थात् ईश्वर ने प्रकट होकर ज्ञान सुनाया । धर्म ग्लानि के समय अर्थात् कलियुग के अंत में जब स्वयं परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान सुनाते हैं वहीं कालान्तर में गीता ज्ञान के नाम से प्रसिद्ध होता है। वे ज्ञान के गीत हैं जो ईश्वर द्वारा गाये जाते हैं । अत: वैदिक काल वही काल है जब ईश्वर ने प्रकट होकर गीता ज्ञान सुनाया । वास्तव में गीता ज्ञान ही वेदों का ज्ञान है । इसका प्रमाण यह है कि गीता के अनेक श्लोक वेदों में भी पाये जाते हैं ।

४. ईश्वरीय वाणी का समय द्वापर युग ना होकर कलियुग के अंत का समय है । और यही वास्तव में वैदिक काल है। इस समय ही परमात्मा अवतरित होकर आत्माओं के संग ज्ञानगीत गाते हैं । जिसे सुनकर आत्मा रूपी गोपियां आनंद-विभोर होती

है, उनका मन भी गीत आने लगता है, मन के तार बजने लगते हैं, मन और बुद्धि का तार उस मन मोहन परमात्मा से जुट जाता है। संगीत की व्याख्या करते हुए संगीतज्ञ कहते हैं कि गायन, वादन नर्तन ये तीन अंग मिलकर ही संगीत कहलाता है। तो यही तो वह समय चल रहा है जब भगवान अवतरित होकर ज्ञान गीत गा रहे हैं और आत्मा रूपी गोपियां गा रही हैं और नाच रही हैं ।

५. कलियुग के अंत में ही परमात्मा शिव अवतरित होकर कलियुगी पतित मानवों को ज्ञान रूपी सोमरस पिलाते हैं जिसे पीकर वे ही पतित मानव अमरत्व प्राप्त करते हैं अर्थात् देव पद प्राप्त करते हैं । वास्तव में सोमरस (ज्ञानामृत) अज्ञानी पतित मानवों को पिलाया गया । सोमरस देवताओं ने नहीं पिया । लेकिन कलियुगी नर ने पिया जो नारायण बना । इस सोमरस अर्थात् ज्ञानामृत को पीकर ही अज्ञानी कलियुगी मनुष्यों ने नृत्य किया अर्थात् उनका मन नाचने लगा । वह कोई पैर का नृत्य नहीं था मन का नृत्य था ।

६. परमात्मा की ज्ञान मुरली इसी काल में बजी, सरस्वती की वीणा, ब्रह्मा (अर्जुन) की ज्ञान वीणा भी इसी समय बजी जिसे सुनकर कलियुगी मानव का मन नृत्य करने लगा और ज्ञान गीत गाने लगा । श्रीमद्भागवत् में उल्लेख है कि भगवान की मुरली सुनकर गोप-गोपियां इतनी आनंद-विभोर हो जाती थीं कि अपने सांसारिक कार्यों को छोड़कर नंगे पांव दौड़ पड़ती थीं। क्या बांस की मुरली सुनकर वे इतना आनंद-विभोर हो जाती थीं ? कानों के माध्यम से तो उन्हें इंद्रिय सुख की ही प्राप्ति हो सकती थी । किंतु भगवान की मुरली सुनकर उन्हें जो सुख प्राप्त होता था वह अतींद्रिय सुख था । उन्हें संगीत के इंद्रिय सुख से उच्च किसी अलौकिक अतींद्रिय आनंद की प्राप्ति हुई थी । स्थूल संगीत का आनंद तो प्राय: सभी उठाते हैं किंतु भागवत् के अनुसार केवल कुछ गोप-गोपियां ही मुरली की ध्वनि पर दौड़ पड़ती थीं। तो अवश्य भगवान की मुरली कोई सूक्ष्म चीज़ होगी जिसका आनंद विषय वासनाओं में डूबे मनुष्य नहीं उठा पाये होंगे । अत: यह कहना कि गीता के भगवान ने बंसरी के रूप में कोई स्थूल वाद्य या साज बजाया था, यह मान्यता गलत हो जाती है । भगवान ने कलियुग के अंत में गीता ज्ञान सुनाया था । वह बहुत मधुर, मनमोहक, मर्मस्पर्शी था । उस रसीले ज्ञान की उपमा मुरली के सुरों से की गई । वास्तव में जिन गोप-गोपियों का गायन है वे कृष्ण के जमाने का नहीं बल्कि वे तब हुईं जब कलियुग के अंत में भगवान ने अवतरित होकर ज्ञान मुरली सुनाई । इस संदर्भ में गोपी शब्द का अर्थ जान लेना भी जरूरी है। गोपी अर्थात् वे जीवात्माएं जो इंद्रिय भान से ऊपर उठ गई हों, अर्थात् जिन्होंने गो अर्थात् इंद्रियों को पी लिया हो ।

७. आत्मा पुनर्जन्म लेती है । और शरीर बदलने पर उसका नाम रूप भी बदल जाता है। ब्रह्मा की आत्मा शरीर छोड़कर सतयुग में दूसरा शरीर लेती है जिसके शरीर का नाम श्रीकृष्ण है। श्रीकृष्ण का जन्म कलियुग के अंत में घोर अज्ञान रात्रि के समय हुआ और फिर सतयुग का प्रारम्भ हुआ । जिन आत्माओं ने कलियुग के अंत में परमात्मा से ईश्वरीय ज्ञान के गोपनीय रहस्यों को समझकर कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त की ये ही गोप-गोपियां सतयुग में देवी-देवता बनते हैं । इन गोप-गोपियों ने श्रीकृष्ण की मुरली नहीं वरन् परमात्मा शिव की ''ज्ञान-मुरली'' सुनी जिसे सुनकर वे मंत्रमुग्ध हो जाती थीं। अत: गोप-गोपियों का संबंध परमात्मा शिव से है न कि श्रीकृष्ण से ।

## "...इतनी चाहता है बाप तुमसे

ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क., देहली.

पड़े तेरी नज़र तो लोग देह भूल जाएं,
चहूं ओर ऐसा रूहे प्रकाश फैल जाए,
नहीं तुम पर झांक रही खुद पवित्रता तेरी नज़र से,
पावनता इतनी चाहता है बाप तुमसे।।

तू चले तो लगे कंगल फूल चला आए,
चहूं ओर शांति छटा बिखरा जाए,
तू नहीं, पर चली आ रही शांति खुद डगर पे निकल के।
एहसास करे हर आत्मा अन्दर से।
पावनता इतनी चाहता है बाप तुमसे।।

तू बोले तो महावाक्य बन जाएं,
गहरे स्मृतिपटल पे टंक जाएं,
साधारण नहीं पर लग जाएं वरदान बनके।
महानता इतनी चाहता है बाप तुमसे,
तू करे कर्म तो यादगार बन जाएं,
हर यादगार प्रभु-चरित्र झलकाए,
तू छिप जाए और चरित्र तेरा चमके।
अपेक्षा इतनी करता है बाप तुमसे।

देखो न ! शतक अर्ध बीत गया बाप को उतरे,
और परिवर्तन तुझे भी खुद में करते-करते,
हो जा अब खुद प्रयोगशाला साइलेंस बनके।
कर योग पर प्रयोग हो जा अंत:वाहक उड़ के,
जग को दे सकाश ज्योति पुञ्ज बन के,
पावनता इतनी चाहता है बाप तुमसे। □

८. संगीत-शास्त्रियों का मत है कि संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा हुई । इसका रहस्य यह कि कलियुग के अंत में निराकार परमात्मा शिव जिसे अजन्मा कहते हैं वह सत्य गीता ज्ञान सुनाने के लिए कलियुगी वृद्ध मनुष्य के शरीर (रथ) में प्रविष्ट होकर उसके मुख से ज्ञान मुरली सुनाते हैं और उस मनुष्य का आध्यात्मिक जन्म होने से उसका नाम बदलकर ब्रह्मा रखते हैं । अत: वेदों के निर्माता ब्रह्मा को बता दिया गया । किंतु वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान या वेद-वाणी निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा की है जो ब्रह्मा मुख से निसृत हुई। ज्ञान का स्रोत ब्रह्मा नहीं किंतु परमात्मा शिव है जिसने ब्रह्मा को अपना माध्यम अथवा वाहन बनाया । शिवलिंग के सामने नंदी की मूर्ति दिखाने का यही रहस्य है । निराकार परमात्मा ने कलियुग के अंत में धर्मस्थापनार्थ, ज्ञान के गीत ब्रह्मा (साकारी मनुष्य) मुख से गायें । इन ज्ञान गीतों का प्रभाव कलियुगी मनुष्य पर किस प्रकार पड़ा इसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। अत: इस दृष्टि से कह सकते हैं कि संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा द्वारा हुई । परंतु यह मान्यता गलत है कि ब्रह्मा ने संगीत कला शिव को दी । वास्तव में ज्ञान गीत गाने की कला परमात्मा शिव ने ब्रह्मा को सिखाई और सरस्वती को भी सिखाई । शिव से ही ब्रह्मा और सरस्वती (जिन्हें क्रमश: आदि देव व आदि देवी जगदंबा कहा जाता है) ने ज्ञान गीत सुनकर उन गीतों को कलियुगी पतित मनुष्यों को बड़े ही सुंदर मनमोहक ढंग-से सुनाया । मानो वीणा बज रही हो । ब्रह्मा सरस्वती तो ब्राह्मणी थे और परमात्मा शिव हैं । अत: ब्रह्मा शिव को कैसे सिखा सकते हैं ।

9. वस्तुत: ईश्वरीय महावाक्य उसी के मुख से निसृत हो सकते हैं जो परमात्मा का वाद्य, परमात्मा का यंत्र, परमात्मा की मुरली बन गया हो। मुरली का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता बजाने वाला जैसी चाहे आवाज़ उससे पैदा कर सकता है। उसकी अपनी कोई ध्वनि नहीं। वह पूर्ण खाली और अहम् शून्य है। जो अपने अहम् को समाप्त कर पूर्ण निरहंकारी बन जाता है वह परमात्मा की मुरली बन जाता है। उसी के मुख से ईश्वरीय महावाक्य निसृत होते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा परमात्मा शिव के वाद्य बन चुके थे। उन्होंने अपने शरीर रूपी रथ का सारथी परमात्मा को बनाया और बुद्धि की लगाम उनको सौंप दी। सरस्वती ने भी उनका अनुसरण कर श्रीमत् के अनुकूल अपना आचरण बनाया। □

चिन्तन

# दुश्मन कौन !

—ब्र.कु. ओमप्रकाश., बांदा

एक बार यूनान के दार्शनिक "डॉयोजिनस" से किसी ने पूछा—"आपकी क्या सलाह है! अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए मुझे क्या करना चाहिये ?

दार्शनिक ने फोरन जवाब दिया, "उनके मुकाबले ज्यादा नेक और गुणवान बन जावो।"

विचार करने तथा जीवन में धारण करने योग्य है। यह बात । किंतु दुनिया में हो क्या रहा है। यही न कि-ईंट का जवाब पत्थर से दो और, थप्पड़ का जवाब घूंसे से दो । और यदि कोई घूंसा दिखाये तो उसका कचूमर निकाल दो । हिंसा का बदला डबल हिंसा से । आज संसार में चहु ओर बदले ही बदले की भावना का बोलबाला है । तो कौन अमल करेगा, यूनान के महान् दार्शनिक डॉयोजिनस की सलाह पर अथवा भारत के महान् सपूत महात्मा गांधी के सिद्धांत पर । जिन्होंने कि एक गाल पर दुश्मन का थप्पड़ खाया तो दूसरा गाल उसके सामने यह कहते हुए कर दिया "ऐ मेरे भाई ! अभी यदि संतोष न हुआ हो, तो दूसरा भी आपके सामने प्रस्तुत है।"

गंभीर चिंतन की आवश्यकता है, "दुश्मन के मुकाबले ज्यादा नेक और गुणवान बन जावो।" निश्चित ही लोकिक जीवन में इस महावाक्य से अपार सफलता मिलती है। किंतु सर्व-आत्माओं के परमपिता शिव परमात्मा तो इससे भी ऊंचा महान् मंत्र ब्रह्मा-तन के माध्यम से देते हैं।" मीठे बच्चे,कोई भी तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं। विचारो । जब कोई मनुष्य तुम्हारा दुश्मन ही नहीं तो बदला लेने की बात ही कहां से आई। तुम्हारी दुश्मन तो है माया ! तुम्हारे दुश्मन तो है पांच विकार अर्थात् काम, क्रोध, मोह, लोभ व अहंकार।

आगे शिवबाबा कहते, "प्यारे बच्चो। तुम्हें इन दुश्मनों पर जीत पानी है । सच तो यह है कि कलियुग में कोई मनुष्य कितना ही महान् से महान् क्यों न हो, उसमें ये विकार कुछ-न-कुछ मात्रा में अवश्य ही होते हैं । तो तुम्हें उनके मुकाबले नहीं किंतु मुझ सर्व के हितैषी, सर्व गुण सम्पन्न, शांति के दाता, सुख के दाता, व नेक परमात्मा समान बनना है।"

तो आओ मेरे प्यारे भाइयों-बहनों, क्यों न हम दृढ़ संकल्प हों और जुट जायें कि हमें आज के मुकाबले अधिक नेक और गुणी ही नहीं वरन् बाप समान सम्पूर्ण बनना है।" □

# मनचलदास और मतलबी दोस्त

—ले.-ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

कलियुग के प्रारम्भ काल का यह एक वृत्तांत है। एक व्यक्ति, जिसका नाम शिव नारायण था, बहुत ही अच्छे स्वभाव का सज्जन पुरुष था । अपनी ईमानदारी से उसने काफ़ी धन-सम्पत्ति इकट्ठी कर ली ताकि उसकी संतान भी धन-सम्पदा के सुख से वंचित न रहे । उसका एक इकलौता बेटा था जिसका नाम था—मनचलदास । मनचलदास का जैसा नाम था, वैसा ही उसका काम था । वह सदा अपने मन के ही कहे पर चलता था । पिताजी उसके कल्याण के लिए उसे जो वचन कहते, उसे सुनकर अनसुना कर देता । सुखी-सम्पन्न परिवार होने के कारण बहुत-से लड़के उसके दोस्त बने हुए थे । वे सभी खाऊ-पिऊ और मतलबी दोस्त थे, परंतु मनचलदास इनकी बनावटी दोस्ती को समझता नहीं था । उसके पिता शिव नारायण ने कई बार उसे समझाने की कोशिश कर ली परंतु वह उनकी मानता कहां था ?

आखिर पिता को बुढ़ापे की अवस्था में अस्वस्थता ने आ घेरा । शिव नारायण ने समझा कि अब उसकी काया ज़्यादा दिन तक उसका साथ नहीं देगी । अत: एक दिन उसने बहुत प्यार से मनचलदास को बुलाकर अपने पास बिठाकर प्यार-पुचकार से उसे फिर समझाने की कोशिश की ।

शिव नारायण बोले—"बेटा, अब तो मैं थोड़े दिन का मेहमान हूं । कुछ दिन के बाद मेरी ये आंखें बंद हो जायेंगी और ये हाथ जो आज तुझे दुलार कर रहे हैं, निश्चेत हो जाएंगे । और, अगर मैं चाहूंगा भी सही तो भी तुम्हारे प्रति प्यार के वचन बोल नहीं सकूंगा क्योंकि यह मुख तथा सारा शरीर पृथ्वी पर पड़े एक ठूंठ के समान हो जाएगा । बेटा, उस घड़ी के आने से पहले मैं तुम्हारे ही लाभ के लिए अगर कोई बात कहूं तो क्या उसे मानोगे ?" यह कहते हुए शिव नारायण ने अपना दाहिना हाथ उठाया और अपने बेटे की ठोडी और गाल को अपनी ओर मोड़कर प्यार से उसे देखा और इतने में उसकी आंखें उस प्यार से गीली हो गईं और वह मनचलदास के जवाब की प्रतीक्षा करने लगा ।

मनचलदास कुछ क्षण चुप रहा और फिर पिता के दोबारा पूछने पर बोला—"मानने की होगी तो मान लूंगा।"

**शिव नारायण**—"देखो बेटा, मुझे भी जीवन का अनुभव है । मैं अनुभव के आधार पर ही तुम्हें यह सब कह रहा हूं । तुम्हारे ये दोस्त जिन पर तुमको बहुत नाज़ है, ये सब स्वार्थी और मतलबी हैं । जब तक तुम्हारे पास धन-दौलत, मकान-दुकान तथा अन्य सम्पत्ति है, तब तक ये तुमसे मित्रता के वायदे करते हैं और तुम इतने भोले हो कि इनकी बदनीयत को नहीं समझते । इसलिए बेटा, भले इनसे बातचीत करो, मिलो-जुलो लेकिन इनके मायाजाल से अवश्य बचे रहना । तुम्हारा सब-कुछ खत्म हो जाने पर ये तुमसे मुख फेर लेंगे । बेटा, ईश्वर न करे, तुम्हें वो दिन देखना पड़े।"

**मनचलदास**—"नहीं पिताजी, आपको नहीं मालूम । आपको इन पर यूं ही सन्देह होता है । वे तो मेरे इतने अच्छे, पक्के दोस्त हैं कि मेरे लिए जान की बाज़ी भी लगाने को तैयार हो जायें । पिताजी, मैं ऐसे दोस्तों का संग नहीं छोड़ सकता।" इतना कहकर मनचलदास उठ खड़ा हुआ ।

शिव नारायण ने जाते हुए पुत्र की ओर देखते हुए एक ठंडी सांस भरी और सोचा इसकी तकदीर !

दिन बीतते गये । बेटा उन्हीं दोस्तों के संग में मौज मनाने में मस्त रहता, धन-दौलत उन्हें खिलाने-पिलाने में लुटाता रहता और इधर पिता शिव नारायण अपनी जीवन-यात्रा की समाप्ति नज़दीक देख रहा था । एक दिन उसे ऐसा आभास हुआ कि अब वह चंद मिनटों का ही मेहमान है । उसने अपने बेटे को फिर अपने पास बुलाया और अपने पास बैठने का इशारा किया ।

**शिव नारायण**—बेटे, तुम मेरी एक बात मान लेते तो कितना अच्छा होता । मेरी अंतिम व्यथा समाप्त हो जाती और मैं निश्चिंत होकर प्राण छोड़ता । तुम्हें बाप के प्यार की कसम ! बोलो मानोगे ?

**मनचलदास**—कौन-सी बात ?

**शिव नारायण**—वही, जो पहले कई दफ़ा कह चुका हूँ और जो उस दिन भी कही थी।

**मनचलदास**—सिर हिलाकर 'न' का संकेत करता है।

**शिव नारायण**—"अच्छा...अच्छा, अगर अब भी नहीं मानता तो जब तू उन स्वार्थी दोस्तों के हाथों अपनी सारी की सारी

पूंजी गंवा बैठेगा तो पड़ोसन बुढ़िया की छत से मेरी इस बात को याद करते हुए छलांग लगाने की चेष्टा करना । फिर जो होना होगा, हो जाएगा !'' ऐसा कहते हुए शिव नारायण ने एक ठंडी सांस ली और एक सिसकी भरी और सदा के लिए आंखें मूंद लीं। पत्थर-सम कठोर मन वाले मनचलदास का मन फिर भी न पिघला।

अब मनचलदास घर में अकेला रहता था । उसने सोचा कि कहीं उसके पीछे कभी चोरी-चकारी हो जाए तो अच्छा होगा कि पैसे, ज़ेवर, सोना-चांदी और नकद पूंजी अपने दोस्तों के ही यहां रख दी जाए । मतलबी दोस्तों पर लट्टू तो वह हुआ ही था, उसे और सूझता भी क्या ? नाम ही मनचलदास था । किसी बड़े-बुजुर्ग और अनुभवी व्यक्ति से राय किये बिना अपने ही मन पर चलकर, उसने सब चीज़ें दोस्तों ही के ठिकाने पहुंचा दीं । न कोई लिखा-पढ़ी, न रसीद, न कोई गवाह और न कोई अमानत और ज़मानत ! कच्चे पन से बाप की मेहनत की कमाई को उसने एक धक से दूसरों के डेरे डाल दिया जैसे उसका कुछ मोल ही न हो और उसके सारे दोस्त महाराजा हरीशचंद्र के साक्षात् अवतार हों । वाह रे, मनचलदास !

कुछ ही समय के बाद मनचलदास को पैसे की आवश्यकता हुई और वह उस मजबूरी की हालत में अपने एक दोस्त के पास गया जिसके यहां उसने नकद पूंजी रखी थी । उसका वह दोस्त सखतलाल बोला—''सुनाओ दोस्त, कैसे आना हुआ ?''

**मनचलदास**—''आज कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ी थी, ज़रा जल्दी से मेरी अमानत दे दो क्योंकि मैंने किसी को पैसे देने हैं।''

**सखतलाल**—अमानत, कैसी अमानत, यार क्या बात करते हो ? आज ठीक तो हो ?

**मनचलदास**—सखतलाल, हंसी-मज़ाक छोड़ो, मैं ज़रा जल्दी में हूं । मेरा वो लोहे का संदूक ला दो ।

**सखतलाल**—कैसी बहकी-बहकी बातें करते हो, यहां कोई संदूक रखी है ? हम कोई किसी के चौकीदार या रखवाले हैं कि उसकी संदूक का पहरा देते रहें । हम भला क्यों किसी के पैसे रखेंगे, हमारे पास क्या कोई कमी है ? दूसरों के जोखिम को अपने पास रखकर हम क्यों मुसीबत मोल लें। बाकी दोस्ती में पैसा-धेला, नज़राना-तोहफा तो एक-दूसरे को देते-लेते ही रहते हैं लेकिन तुम अमानत कौन-सी कहते हो ? मैं अमानत तो किसी की धेले की भी नहीं रखता । मुझे तो अमानत शब्द से ही चिढ़ है । मैं कोई बनिया या ब्याजखोर थोड़े ही हूं कि किसी की अमानत अपने पास रखूंगा । हं...हं...हं... कमाल है ! कैसा जमाना आ गया है ? यह कैसी दोस्ती ?

मनचलदास अपना सिर नीचे कर लेता है, चिंतित और व्याकुल हो उठता है । उसे अपने पिता शिव नारायण की बात याद हो आती है । दोस्त की आंखें बदली हुई देखकर उसे ठेस लगती है और इस कटु अनुभव से उसकी आंखें गीली हो जाती हैं और एक लम्बी सांस लेकर वह उठ खड़ा होता है और धीरे से वापस जाते हुए कहता है—''इसका मतलब यह है कि तुम मेरे पैसे नहीं दोगे ? देख लिया मैंने दोस्ती को । मेरे पिताजी ठीक कहते थे कि ये सब मतलबी दोस्त हैं और मैं उनका ऐसा बेटा हूं कि जिसने मरते दम तक उनकी बात न मानी।'' मनचलदास वहां से रवाना ही हो रहा था कि सखतलाल ने उसे आखिरी सदमा पहुंचाते हुए कहा—''तुम भी सचमुच पागल हो । पागल ही नहीं, असभ्य भी हो कि तुम हमें 'मतलबी' कहते हो । आज तो तुम्हें छोड़ देता हूं, फिर कभी अगर इस दरवाजे के अंदर आना तो शराफत से पेश आना और झूठे तकाजे मत करना।''

मनचलदास ने सोचा कि यह दोस्त तो सचमुच मतलबी निकला लेकिन जो थोड़ी-सी पूंजी राशि दूसरे के पास रखी थी, चलो उसके पास चलते हैं । हो सकता है, वह हमारी अमानत हमें लौटा दे।

यह सोचकर मनचलदास अपने दूसरे दोस्त के घर पहुंचा । उसके उदास चेहरे को देखकर उसका वह दोस्त—मुफ़तलाल बड़ी हमदर्दी दिखाते हुए बोला—सुनाओ दोस्त, आज हाल तो ठीक है।''

**मनचलदास बोला**—''दोस्त, सचमुच दुखी हूं । मन का हाल तो कभी फिर बताऊंगा । अभी तो जल्दी में हूं । मैंने जो पैसों व जेवरों का एक बक्स तुम्हारे पास रखा था, इस समय उसे लेने आया हूं । वह जल्दी से दे दो ताकि मैं चलूं।''

**मुफ़तलाल**—''तुम मुफ्त में ही मुझसे सोने-चांदी का तकाज़ा कर रहे हो । मैं निश्चिंत सोने वाला व्यक्ति । भला किसी का सोना-चांदी अपने पास रखकर अपनी नींद क्यों हराम करूंगा ? तुम्हें पता है कि मैं तो वैसे भी वैरागी आदमी हूं । सोने-चांदी से तो मुझे वैसे ही नफरत है और तुम कहते हो कि मेरे पास तुमने सोना-चांदी रखा था ! मैं तो समझता था मुझमें भूलने की आदत है, भई तुम तो कमाल के भुलक्कड़ हो, किसी और के पास रखकर नाम मेरा लेते हो । मज़ाक छोड़ो, कोई असली बात करो ।

मनचलदास पहले अनुभव से भी कटा हुआ महसूस कर रहा था और ये दूसरा घाव उसे और लगा । वह समझ गया कि यहां रखी हुई अमानत भी अब हाथ नहीं लगेगी । ठंडी सांस लेते हुए वह उठ खड़ा हुआ और चलते-चलते कह गया—''सचमुच जमाना बड़ा खराब है । पिताजी ठीक ही कहते थे...।''

मुफतलाल बोला—"कैसा बेतुका आदमी है । आज इसको पिताजी याद आ रहे हैं ।"

अब मनचलदास ने सोचा कि सचमुच मैंने पिताजी की बात न मानने के परिणामस्वरूप आज यह आड़ा दिन देखा । धन-पूंजी भी गवाई और दोस्ती भी खत्म हुई । अब उनकी कम-से-कम मैं आखिरी बात तो मान लूं, शायद उसमें ही मेरा कल्याण हो । उन्होंने अंतिम नसीहत दी थी कि जब दोस्तों से धोखा खा बैठो तो पड़ोसन बुढ़िया की छत पर चले जाना और फिर देखना वहां क्या होता है।

इसी बीच उन दोनों दोस्तों ने आपस में यह सलाह करके कि मनचलदास कहीं कुछ लोगों को या पुलिस को लेकर आ जाए और तलाशी ले ले और हमारे यहां उसकी अमानत न पाई जाए, उन बक्सों को पड़ोसन बुढ़िया की छत पर रख दिया था क्योंकि उन्होंने सोचा था कि मनचलदास वहां तो जाएगा ही नहीं । अब मनचलदास जब वहां पहुंचा तो बक्सों को देखकर हैरान हो गया । और उसने सोचा कि पिताजी की इस एक बात को मानने में ही मेरा इतना फायदा हुआ । अगर मैं पहले से ही उनकी बात मान लेता तो मुझे ये दिन न देखना पड़ता और पिताजी भी प्रसन्न होते ।

बच्चो, ऐसे ही कई लोग परमपिता परमात्मा शिव की दी हुई शिक्षाओं को भी नहीं मानते । यदि वे उनकी हरेक शिक्षा को मानें तो उन्हें अपार प्राप्ति हो। □

**जोरहट** की ओर से गोलाघाट नगर में विश्व-नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन पी. डब्ल्यू.डी. इंजीनियर कर रहे हैं। साथ में ब्र.कु. राधा एवं मंजू खड़ी है।

**जयपुर (राजापार्क)** सेवाकेंद्र पर आयोजित प्रदर्शनी तथा 'सर्वात्माओं के पिता' की झांकी का उद्घाटन कर रहे हैं कामन्डेड एरिया डिवेल्पमेंट के कमिश्नर एवं सचिव, साथ में कुरूप जी व निर्मला बहन खड़ी हैं।

**अम्बाला शहर** में बैसाखी मेले में प्रभु-प्रेमियों को ईश्वरीय संदेश देने पश्चात् सम्मेलन के अध्यक्ष सरदार त्रिलोक सिंह जी को सौगात देती हुई ब्र.कु. सरोज बाला जी।

**नवरंगपुर (उड़ीसा)** की ओर से जयपटना में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन महारानी अनुरूपा मंजरी जी दीप प्रज्ज्वलित कर, कर रही हैं । उनका साथ दे रहे हैं ब्र.कु. प्रह्लाद जी तथा नीलम जी।

# "मीठे बाबा का मीठा मधुबन"

—बी.के. कश्मीरी., आगरा

वर्ष १९८० में योग शिविर में मधुबन जाने का अवसर मिला । परमात्मा की आसीम कृपा थी कि मैं प्रथम दिवस शिविर में बैठी और शीलू बहिन की कामेंट्री से प्रभावित होकर मैंने बिंदु-स्वरूप शिवबाबा का प्रकाश देखा । प्रकाश क्या था मानो अखण्ड ब्रह्म महतत्व से किरणें मेरे ऊपर उतर-उतरकर मुझे सांत्वना प्रदान कर रही हैं । काफी समय तक मैं आनंद विभोर होकर देखती रही । मन से रह-रहकर यही निकल रहा था **"जो पाना था सो पा लिया।"**

मधुबन से लौटकर अपने कार्य व्यवहार में लग तो गयी किंतु हर समय उस आनंद में ही डूबे रहने को मन चाहता था और किसी भी कार्य में मन जमता ही न था । स्थानीय सेंटर पर भी कभी-कभी जाती हूं घर में शिवबाबा का बिंदु प्रकाश लगा रखा है और उससे बैठकर बातें भी करती हूं। अपनी बातें शिवबाबा को सुनाती हूं, विशेष रूप से अमृतवेले बाबा से रूह-रूहान करती हूं और सारे दिन प्रसन्नचित रहती हूं। ऐसा लगता है जैसे बाबा वरदान दे रहे हों कि "सदा प्रसन्नचित रहा करो" और मैं वास्तव में अपने को प्रसन्न रखने की कोशिश करती हूं । कोई भी बड़े-से-बड़ा दुख या संकट मुझे छोटा मालूम पड़ता है ।

परमात्मा का साक्षात्कार करने को मन रह-रहकर व्याकुल होता रहता अत: मधुबन पुन: जाने का अवसर मिला ।

जून १९८४ में पार्टी के साथ मधुबन गयी । सुना था कि गुलज़ार बहिन के शरीर में बाबा आते हैं लेकिन मन में शंका तो थी ही कि यह कैसे सम्भव हो सकता है कि साक्षात परमात्मा हमारे सम्मुख आकर घंटों बैठकर मुरली सुनायें और प्रत्येक पार्टी से अलग-अलग बातें करें, सबको दृष्टि प्रदान करते हुए टोली दे और वरदान दे । यही शंका और जिज्ञासा लेकर मैं ओमशांति भवन के विशाल हाल में शाम से जाकर बैठ गयी । अंधकार छाते ही वातावरण बदल गया । बाबा की प्रवेशता मैंने स्वयं देखी । एक ही आसन से बाबा रात-भर बैठकर प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाते रहे । मेरी बारी आयी तो मैं जाने क्या-क्या प्रश्न सोचकर गयी थी मगर बाबा से दृष्टि मिली तो सब भूल गयी । याद रहा तो केवल **मैं और मेरा बाबा**—क्या कमाल की दृष्टि थी ? कितना अद्भुत व आश्चर्यजनक दृश्य था ? बड़ा ही दिव्य, अलौकिक अनुभव हुआ । बाबा के सामने उसी समय दो बार जाने का अवसर मिला । मन कहता उनसे लिपट जाऊं और कहूं "वाह बाबा वाह, क्या कमाल है ?" मेरे प्रश्नों के उत्तर तो उस दृष्टि से ही मिल गये थे । बाबा ने मुझे वरदान दिया "सदा प्रसन्नचित रहा करो" सो रह ही रही हूं। मेरे पुत्र को ठीक होने का वरदान दिया सो वह ठीक है। जो काफी समय से अस्वस्थ रह रहा था।

अगले दिन ब्रह्मा भोजन की व्यवस्था थी । दादी प्रकाशमणि जी के साथ डाइनिंग हाल में भोजन लगवाया गया । चमचमाती थालियां, कटोरियां तथा सुंदर स्वादिष्ट भोजन देखकर मन निहाल हो गया । भोजन तो घर पर भी करते हैं, लेकिन यहां जैसी सुंदर व्यवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

हर काम समय पर तथा इतना सुव्यवस्थित देखा,ग़ज़ब का अनुशासन देखा, इतनी भीड़ को नियंत्रित करना सामान्य मनुष्य के बस की नहीं है, लेकिन मधुबन में हर चीज़, अपने स्थान पर सही लगी । प्रात:काल "अमृतवेला शुद्ध पावन है मेरे लाडले जागो" का गाना स्वत: ही प्रत्येक को बिस्तर से धक्का दे देता है और मन योग में बैठने को करने लगता है। बाबा की कुटिया में तो कितना भव्य, दिव्य दृश्य है ? लगता है बाबा अभी कहने ही वाले हैं "मीठे बच्चे बैठो" मन करता घंटों बाबा के सामने बैठकर बातें करते रहो । कितनी शांति, कितनी पवित्रता है ? कैसा सौम्य व दिव्य रूप है बाबा का !

वहां रहने का स्थान तो कम हो ही जाता है । न जाने कितनी आत्माएं टूट-टूटकर आती हैं ? फिर भी सबको जगह मिलती ही है, सबको भोजन भी मिलता है वह भी समय पर,कोई विलम्ब नहीं, कोई धक्का-मुक्की नहीं और किसी को कोई शिकायत नहीं । कितना कमाल है कुछ कह ही नहीं सकते ।

मधुबन के सेल डिपो में अपार भीड़ लगी रहती है । हर कोई गाने के कैसेट, चाबी का गुच्छा, पैन-पुस्तकें, कैलेण्डर, तस्वीरें, आदि-आदि ढेरों सामान खरीदते ही रहते हैं । मन भरता ही नहीं । मैंने दादी प्रकाशमणि जी से एकांत में भेंट करनी चाही, मुझे अवसर मिला । दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे व मेरे पुत्र को जंजीर में शिवबाबा का बैज पहनाया, कितना आनंद आया उस बैज को पहनकर—ऐसा लगा कि शिवबाबा स्वयं साक्षात हमारे पास आ गये हों।जंजीर को बार-बार देखने को मन करता रहा।

मधुबन का कार्यक्रम इतना व्यस्त रखा गया था कि कहीं अपना काम करने की अलग से कोई गुंजाइश ही न थी । दूसरे दिन मैंने कहा कि ''सन् सैट प्वाइंट'' देखने चलेंगे लेकिन वही समय बाबा के प्रवेश का होता था अत: न जा सके । अगले दिन मैंने निश्चय किया कि आज चाहे बाबा को न देखें घूमने ज़रूर जायेंगे, इतनी दूर माउंट आबू आकर भी न घूमे तो क्या किया, अत: मैं अपने पुत्र सहित एक भाई को लेकर पांडव भवन से निकल पड़ी । शाम हो गयी थी । पहले नक्की झील देखी । देखते-देखते, घूमते-घूमते काफी अंधेरा हो चला । हम लोग वापस चल पड़े । चलते गये, चलते गये लेकिन पांडव भवन का कहीं निशान नहीं दिखायी दिया । मैंने साथ वाले भाई से कहा ''हम लोग कहां आ गये ? लगता है काफी दूर कहीं रास्ता भटक गये।'' सामने ध्यान से देखा तो ''सन् सैट प्वाइंट'' बड़ा ही आश्चर्य लगा कि जहां जाने को मन कर रहा था वहीं अनायास बाबा ने पहुंचा दिया और वह भी इतनी रात में—जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते वापस चल पड़े तब कहीं काफी देर से पाण्डव भवन पहुंचे। मन में रह-रहकर यह आ रहा था कि वाह बाबा अनायास ही कहां-का-कहां पहुंचा दिया ? कि ''लो बच्चे जहां की रट लगा रखी थी वहीं पहुंच'' गये ।

कन्याओं का समर्पण समारोह देखा । कितना सुंदर दृश्य था । लगता था, सचमुच स्वर्ग में बैठे हैं । श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्मा वत्स स्टेज पर कैसे सुंदर लग रहे हैं । मैं सोचती रही आज के युग में जहां माता-पिता इतना घृणित कार्य भी पुत्रियों से कराने लगे हैं । काल-गर्ल भी बनने लगी हैं उसी युग में धन्य हैं यह माता-पिता जिन्होंने अपनी कन्याएं ईश्वरीय सेवा हेतु समर्पित कर दी हैं । सबसे अंत में स्टेज पर आओ स्वर्ग बनायें, गाने के साथ सारे मधुबन निवासी नाचे, हमारा मन किया कि हम भी अपने स्थान से उठकर नाचने पहुंच जायें।

मधुबन अत्यंत स्वच्छ सुंदर बना हुआ है। द्वार पर प्रवेश के साथ ही खुशबू महकने लगती है । रजनीगंधा की महक से सारा वातावरण महकता ही रहता है । सारे भाई-बहिन अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं । न जाने कितने सेवाधारी सेवा में लगे रहते हैं ? आश्चर्य लगता है कि किसका अनुशासन है ? किसकी आज्ञा है ? किसका आदेश है एवं किसका संदेश है ? कहां से इतनी सुंदर सुचारू व्यवस्था होती है ? कैसा शिवबाबा का नज़ारा है ? कैसा कमाल है ?

हमें तो चलते समय ''गो सून'', ''कम सून'' की भी टोली मिली थी । हम वापस आ गये हैं अब प्रतीक्षा में हैं कब मधुबन जाने का तथा बापदादा से मिलने का पुन: अवसर पाएंगे ? बाबा का वरदान तो मिल ही गया है । ऐसा भाग्य किसी-किसी का ही होता है । वैसे तो बाबा फिर बुलायेंगे ही किंतु यदि संयोग न भी बना तो शिवबाबा को सदा-सदा याद रखेंगे । कैसेट भी लाये हैं, वही सुनते रहते हैं । अमृतवेले से प्रारम्भ करते हैं । रात तक योग लगाते समय शिवबाबा के प्यारे भजन चलते रहते हैं।

**''हो गये बाबा के हम बाबा हमारे हो गये।''** □

अमृतसर झांकी एवं प्रदर्शनी देखने के बाद डॉ. सेनन जी तथा दुर्गियाना मंदिर के अध्यक्ष भ्राता गोपीचंद भाटिया ब्र.कु. भाई-बहिनों के साथ।

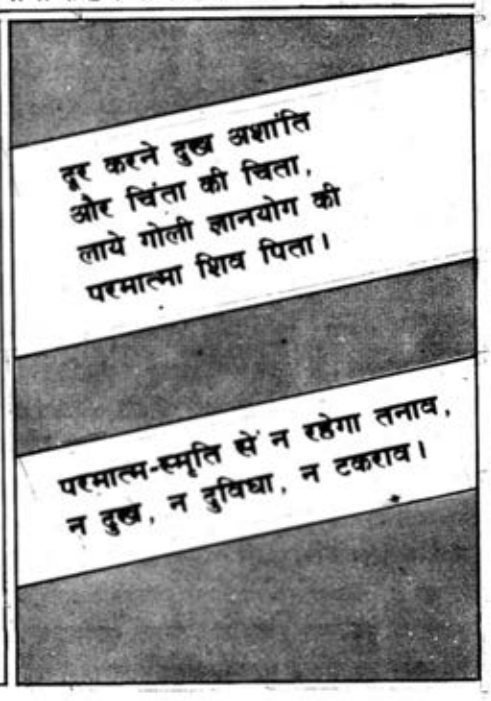

# चैतन्य फूलों की निर्माण वाटिका— "आध्यात्मिक छात्रावास"

लेखक: निरंजन परमार

दिव्य जीवन कन्या छात्रावास, इंदौर

प्रत्येक माता-पिता की हार्दिक इच्छा रहती है कि उनके बच्चे पढ़-लिखकर गुणवान, चरित्रवान, नैतिक तथा सुसंस्कारित बनें ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल हो और वे सफल जीवन व्यतीत कर सकें। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का उद्देश्य है ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा मनुष्यों का चरित्र-निर्माण कर विश्व में शांति स्थापित करना। इस ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा कई भाई-बहनों ने अपना जीवन दिव्य व अलौकिक बनाया है परंतु साथ-साथ वे कई कारणों से अपने बच्चों के आध्यात्मिक एवं बौद्धिक विकास की तरफ ठीक से ध्यान नहीं दे पाते हैं। जैसे कि कुछ लौकिक व्यस्तता, तो कुछ अत्यधिक अलौकिक व्यस्तता के कारण। फलस्वरूप स्वस्थ वातावरण एवं उचित मार्गदर्शन के अभाव में उनके बच्चे आजकल के दूषित वातावरण एवं संगदोष के कारण धीरे-धीरे बुरे मार्गों की ओर अग्रसित होने लगते हैं और बुराइयां अपनाने लग जाते हैं। बच्चों में और विशेषकर कन्याओं में कुशल नेतृत्व एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन की नितांत आवश्यकता को देखकर ही जुलाई १९८३ में इंदौर में विशेष रूप से कन्याओं के लिए "दिव्य जीवन कन्या छात्रावास" की स्थापना की गई है।

भारत की हृदयस्थली, देवी अहिल्या की सुप्रसिद्ध नगरी इंदौर में जो कि अपने शुद्ध वातावरण, स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु, शांति-प्रियता, उच्च-शिक्षण एवं व्यापारिक गतिविधियों के लिये देश में प्रसिद्ध है। ऐसी इंदौर नगरी में स्कूल-कालेजों के निकट, प्रतिष्ठित लोगों की बस्ती में जहां वातावरण शहर के मध्य होते भी शांत, हरियाली-युक्त खुले एवं सुरम्य स्थान न्यू पलासिया में यह "दिव्य जीवन कन्या छात्रावास" ओमशांति भवन, क्षेत्रीय कार्यालय के समीप अपने स्वयं के नव-निर्मित विशाल "शक्ति भवन" में अपना चौथा वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण कर रहा है। इंदौर में हिंदी एवं अंग्रेज़ी—दोनों माध्यमों में पढ़ाई की सुविधा उपलब्ध है। वर्ष १९८३-८४ में स्कूल-कालेजों में पढ़ने वाली ६ कन्याओं ने, वर्ष १९८४-८५ में १२ कन्याओं ने, वर्ष १९८५-८६ में २५ कन्याओं ने अध्ययन किया। वर्तमान में विभिन्न प्रदेश जैसे—उत्तर प्रदेश, बिहार, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, आसाम, बंगाल, मध्य प्रदेश आदि प्रांतों की कन्यायें अध्ययनरत हैं। चूंकि वर्तमान में भवन निर्माण का कार्य चल रहा है एवं जितना निर्माण कार्य पूरा होता है उतनी संख्या में ही छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है। अतः सारे भारत से जितने आवेदनपत्र आते हैं सबको प्रवेश देना सम्भव नहीं होता है। यहां ईश्वरीय ज्ञान-मार्ग पर चलने वाली ९वीं कक्षा एवं इसके आगे कालेज तक की छात्राओं को ही प्रवेश दिया जाता है। ३० मई तक आवेदनपत्र इंदौर पहुंच जाना ज़रूरी है। आवेदनपत्र, नियमावली आदि डाक द्वारा मंगाई जा सकती है।

## एक सम्पूर्ण विकसित, सुव्यवस्थित अलौकिक दिनचर्या

''दिव्य जीवन कन्या छात्रावास'' जहां पर कन्याओं को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ मिलता है—व्यवहारिक ज्ञान, अलौकिक शिक्षा, उत्तम गृह कार्य व्यवस्था का ज्ञान आदि-आदि । यहां की दिनचर्या प्रात: ३.३० से प्रारम्भ होती है। प्रात: ३.३० बजे तैयार होकर ३.४५ से ४.३० तक अमृतवेले का योग करना। ४.३० से ५.३० बजे तक स्नानादि कर क्लास के लिये तैयार होना। ५.३० से ६.१५ तक टहलने जाना या लौकिक पढ़ाई का अभ्यास करना। ६.१५ से ७.३० तक आध्यातिमक क्लास (जिनका स्कूल सुबह के सत्र में लगता है वे संध्या को यह क्लास करती हैं)। प्रात: क्लास के बाद वे अपने-अपने निजी कार्य के साथ-साथ गृह कार्य एवं रचनात्मक कार्य जैसे कि—व्यक्तित्व विकास, बागवानी, घर की सजावट, भोजन बनाना आदि कार्यों का शिक्षण प्राप्त करती हैं। इस तरह ८.०० बजे तक फारिग होकर नाश्ता करना और फिर लौकिक पढ़ाई करना एवं अपने कार्यक्रमानुसार स्कूल-कॉलेज जाना। प्रात: स्कूल जाने वाली छात्राएं भी १२ बजे वापस लौटकर भोजन के बाद आराम के पश्चात् सांयकाल ४.०० से ६.०० तक लौकिक पढ़ाई का अभ्यास करती हैं। सांयकाल में चाय-नाश्ते के पश्चात् ६.३० से ७.०० तक समयानुसार योग एवं अध्यात्मिक संग्रहालय सेवा। ७.३० से ९.०० तक सभी रात्रि का भोजन प्राप्त करते हैं। रात्रि ९.३० से १०.०० तक सामूहिक योग एवं रात्रि १० बजे से विश्राम।

इस प्रकार प्रात: के सत्र में एवं दोपहर के सत्र में स्कूल-कॉलेज जाने वालों के लिये मिश्रित रूप से योग, सेवा, धारणा सभी विषयों की नियमित शिक्षा मिलती है। समय प्रति समय वरिष्ठ बहनों द्वारा ज्ञान के गुह्य विषयों, योग की गहराई आदि पर धारणा की क्लासेस भी होती हैं। छात्रावास अधीक्षिका छात्राओं की लौकिक एवं अलौकिक पढ़ाई का पूरा-पूरा ध्यान रखती है। भोजन व्यवस्था हेतु दो समर्पित मातायें कार्यरत हैं।

## शारीरिक विकास एवं सांस्कृतिक गतिविधियां

छात्रावास में 'संगीत प्रकोष्ठ' का उद्घाटन सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशक भ्राता रवीन्द्र जैन एवं उनकी युगल द्वारा सम्पन्न हुआ। चित्र उसी अवसर का है।

छात्रावास के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह-१९८७ में मुख्य अतिथि ब्र.कु. जगदीश चंद्र जी एवं अध्यक्षा दादी चन्द्रमणि जी थी। चित्र में दादी जी कन्याओं को पुरस्कार देती हुई।

इस प्रकार लौकिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ शारीरिक विकास भी ठीक से हो इसके लिये सभी छात्रायें अपनी-अपनी रुचि अनुसार विभिन्न खेल खेलती हैं, टहलने जाती हैं। स्कूल कॉलेजों में होने वाले वार्षिक कार्यक्रमों में जैसे—वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता आदि में कई कन्याओं ने पारितोषिक भी प्राप्त किये हैं। सांस्कृतिक विकास हेतु कन्याओं को नृत्य, गीत, संगीत आदि सीखने एवं भाग लेने का सुअवसर भी दिया जाता है।

माउण्ट आबू में आयोजित विश्व शांति महासम्मेलन-१९८७ में छात्रावास की कन्याओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने के पश्चात् मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी कन्याओं से उत्साहपूर्वक मिल रही हैं।

अभी हाल ही में माउण्ट आबू में सम्पन्न ५ वें ''विश्व शांति महासम्मेलन'' में ''ओमशांति भवन'' में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये थे। इसी प्रकार इंदौर में होने वाले सम्मेलनों आदि में भी दिव्य गीत, दिव्य नृत्य आदि के कार्यक्रम हन कन्याओं द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। इनके अलावा दिव्य गुणों एवं संस्कारों के विकास के लिये समय-समय पर प्रतियोगितायें आयोजित कर प्रोत्साहन हेतु पारितोषिक का वितरण भी किया जाता है।

## जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन

इस छात्रावास में अध्ययनरत कुछ छात्राओं से चर्चा के दौरान उन्होंने लेखक को बताया कि लौकिक विद्याध्ययन के साथ-साथ आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। उनसे उनकी लौकिक पढ़ाई में किसी भी प्रकार का व्यवधान न होकर वे और ही उन्नति के साधन बन जाते हैं, क्योंकि उनसे उनकी बुद्धि को प्रखरता प्राप्त होती है। और विद्यार्थी अपने लौकिक पढ़ाई में और ही श्रेष्ठता से जुट जाता है और उसे और ही अच्छी कामयाबी प्राप्त होती है जैसे कि पिछले वर्षों में परीक्षा परिणामों से देखा गया। जो कन्यायें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हैं उन्हीं की प्रगति संगीत, नृत्य, आध्यात्मिक ज्ञान, दिव्य गुणों की धारणा आदि में भी उतकृष्ठ रही थी। अभी पिछले वर्ष ही ६ कन्यायें जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हैं ये सब कन्यायें छात्रावास द्वारा चलाई जा रही आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी श्रेष्ठ थीं। आगे उन्होंने बताया कि इस छात्रावास में रहने से टी.वी., सिनेमा देखने आदि की बुरी आदतों से एवं संगदोष से छुटकारा मिलता है तथा संगठन में रहकर किस तरह से आध्यात्मिक उन्नति की जाती है ये बातें सीखने को मिलती हैं। उन्होंने बताया कि घरों में रहने पर न तो आध्यात्मिक पढ़ाई का अवसर मिलता है और न ही अमृतवेले योग लगा पाते थे और न ही नियमित क्लास कर पाते थे। जो कि यहां पर हम यह नियमित अमृतवेले का योग एवं आध्यात्मिक क्लास करते हैं। वहां लौकिक जीवन लक्ष्यहीन था, यहां आकर हमने जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य पाया है। शिक्षा स्तर भी ऊंचा हुआ है। इस प्रकार "दिव्य जीवन कन्या छात्रावास" में संगठन में रहकर जहां एक ओर स्वयं हाथ से सभी कार्य करने के कारण आत्मनिर्भरता आती है तो वहीं दूसरी ओर ईश्वरीय ज्ञान एवं योग की पढ़ाई के द्वारा बौद्धिक विकास, नैतिकता, सामान्य ज्ञान, अनुशासन आदि बातें सहज ही जीवन में आ जाती हैं। इस प्रकार दिव्य जीवन कन्या छात्रावास बच्चों को दिव्य एवं आदर्श जीवन जीने की कला सीखाने वाला एवं चैतन्य फूलों का निर्माण करने वाला यह अपने आप में एक अनुपम संस्थान है। विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें—

अधीक्षिका
दिव्य जीवन कन्या छात्रावास
द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
ओमशांति भवन, न्यू पलासिया
इंदौर-४५२ ००१

कोननगर: आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र.कु. संतरी बहिन शिवध्वज आरोहण करते हुए।

**मानसिक संतुलन रखने के लिए, अपने को मेहमान एवं महान् समझो।**

**सामाजिक स्वास्थ्य की निशानी है, सर्व का सहयोगी बनना।**

**जीवन में बस एक ही बार,**
**शिव पिता से तुम कर लो प्यार।**
**शिव-वत्स, करो सत्ज्ञान-प्रसार,**
**होगा सुख-स्वास्थ्यमय संसार।**

# स्वमान से श्रेष्ठ स्थिति

—बी.के. सूरजमुखी.. रूद्रपुर

योग के मार्ग पर चलने वाली सभी श्रेष्ठ पुरुषार्थी अपने कदमों को तीव्र करने के तीव्र इच्छुक हैं । स्वमान सभी के श्रेष्ठ अरमानों को सहज ही पूर्ण कर देता है । स्वमान में स्थित आत्मा स्वत: ही सर्व फरमानों का पालन कर लेती है और पुरुषार्थ में सबसे बड़े विघ्न 'अभिमान' की यही परम औषधि है । स्वमान की सीट पर बैठी हुई आत्मा को अन्य किसी भी सीट की सूक्ष्म कामना नहीं रहती । स्वमान ही मनुष्य के स्वाभिमान को जगाता है।

भगवान बार-बार आकर हमें याद दिलाते हैं कि तुम कौन हो, तुम किसके हो, ...किसने तुम्हारा हाथ पकड़ा है... तुम्हारी जीवन-नैया का खिवैया कौन है... ? सभी ईश्वरीय महावाक्यों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से दिया गया ईश्वरीय ज्ञान हमें स्वमान में स्थित करने के लिए ही है। राजयोग भी हमारे स्वमान को ही जागृत करता है क्योंकि राजयोग से हमारी सुषुप्त शक्तियां जागृत हो जाती हैं । तो हमारे परमपिता ने जो कुछ हमें याद दिलाया है, वह हमें याद आ जाए, अथवा अनुभव हो जाए अथवा हम उसके स्वरूप बन जाएं—इसे ही स्वमान में स्थित होना कहा जाता है । स्वमान अर्थात् स्व (आत्मा) का जो सच्चा मान है अर्थात् महत्व है, स्वयं की जो महानताएं हैं, जो वरदान व शक्तियां हैं—उनमें स्थित हो जाना । और वास्तव में स्वमान में पूर्णयता स्थित हो जाना ही सम्पूर्णता है।

स्वमान की सीट से नीचे उतरने का कारण रहा—भक्ति। भक्ति में सदा हमें हीनभावनाएं रखना ही सिखाया गया । और शनै:-शनै: ये हीनभावनाएं हमारे अंदर इतनी घर कर गईं कि भगवान के बार-बार स्मृति दिलाने पर भी आत्माएं अपने स्वमान को स्वीकार नहीं कर पातीं । परंतु अब आवश्यकता इस बात की है कि हम शीघ्रता से अपने स्वमान को स्वीकार करें और श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होकर इस विश्व में विचरण करें।

### स्वमान को स्वीकार कैसे करें ?

स्वमान में रहना अर्थात् ईश्वरीय नशे में रहना अर्थात् श्रेष्ठ स्मृति में रहना अर्थात् भगवान से प्राप्त वरदानों का स्वरूप बनकर रहना । यहां हम श्रेष्ठ स्मृतियों पर स्वमान की स्थिति का विवेचन करेंगे ।

**उदाहरणार्थ**—हमें हमारे सर्वशक्तिवान परमपिता ने स्मृति दिलाई कि जब से तुम मेरे बच्चे बने, मैंने तुम्हें 'मास्टर सर्वशक्तिवान भव' का वरदान दे दिया । उन्होंने कहा—''तुम बच्चे मास्टर सर्वशक्तिवान हो।'' परंतु अंतर क्या हुआ ? बच्चे यह सोचते हैं कि हमें मास्टर सर्वशक्तिवान बनना है । वरदाता स्वयं कह रहा है कि मैंने तुम्हें वरदान दे दिया और हम कह रहे हैं कि अभी हमें लेना है । तो हम वरदान को मन से स्वीकार कर लें कि सर्वशक्तियां हमारे पास ही हैं अब हमें तो केवल यही सीखना है कि उन शक्तियों का प्रयोग कैसे करें ! इस प्रकार हम स्वयं को सर्वशक्तियों से सम्पन्न महसूस करेंगे ।

इसी प्रकार दूसरी बात—परम पवित्र परमपिता ने हमें वरदान दिया कि ब्राह्मण बच्चे बनते ही मैंने तुम्हें सम्पूर्ण पवित्रता की सौगात दे दी है । तुम पवित्र आत्मा हो । और बच्चे क्या सोचते हैं कि हमें पवित्र बनना है । यही अंतर है... अर्थात् ईश्वरीय वरदान में अविश्वास हमें इन महानताओं का स्पष्ट अनुभव नहीं करने देता । तो हमें यह नशा हो कि मैं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूं तो हम पायेंगे कि सम्पूर्ण पवित्रता हमारा स्वरूप बनने लगेगा ।

### हमारा स्वमान, छत्रछाया की तरह है—

ईश्वरीय महावाक्य हैं—बच्चे, तुम्हारे ईश्वरीय नशे के वाइब्रेशंस तुम्हारे लिए व दूसरों के लिए छत्रछाया का काम करते हैं । यदि हम ईश्वरीय नशे में रहें तो कोई भी मायावी शक्ति का प्रभाव, गंदे वातावरण का प्रभाव, किसी अशुद्ध आत्मा की छाया या किसी भटकती आत्मा का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ नहीं सकता । इतना ही नहीं, बल्कि स्वमान में स्थित आत्मा दूसरों पर अपना अविनाशी प्रभाव डालती है । स्वमान के वाइब्रेशंस परिस्थितियों को भी बदल देते हैं । परंतु स्वमान की सीट से नीचे उतरी हुई आत्मा को परिस्थितियां ही बदल देती हैं । अत: सदा सबके अनासक्त, अप्रभावित व उपराम रहने के लिए स्वमान में स्थित होना परमावश्यक है।

**स्वमान पुरुषार्थ को सरल करता है—**

आत्माभिमानी स्थिति के लिए केवल अपने को आत्मा मान लेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि आत्मा की सर्वश्रेष्ठ स्मृतियों का स्वरूप बनना ही सम्पूर्ण आत्माभिमानी होना है।

इस स्वमान की गर्मी से आत्मा के जन्म-जन्म के कई संस्कार भी पिघल जाते हैं । जैसे बिंदु-रूप से पाप भस्म होते हैं, वैसे ही स्वमान की स्थिति संस्कारों को दिव्य बना देती है । वास्तव में स्वमान में स्थित हुई आत्मा सहज ही बिंदु-रूप हो जाती है । यह कहना सत्य होगा कि यदि कोई योगी, निरंतर योगयुक्त रहना चाहे तो स्वमान में स्थित होने से यह अनुभव अति सरल हो जाता है । क्योंकि स्वमान का नशा मन को निर्संकल्प रखने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है और स्वमान में रहने से ही मनुष्य को विघ्न-विजयी बनने का बल प्राप्त होता है । जैसे सांसारिक नशे के पदार्थ मस्तिष्क की कार्यगति को मंद कर देते हैं, वैसे ही ईश्वरीय नशे मन की गति को धीमा कर देते हैं । तो सार रूप में यों कहें कि स्वमान सहज ही हमारी स्थिति को महान् बना देता है।

**स्वमान की स्थिति दिन-प्रतिदिन सूक्ष्म हो—**

प्रत्येक पुरुषार्थी ईश्वरीय नशे में रहने का अभ्यास करते हुए भी यही शिकायत करता है कि यह स्थिति सदा नहीं रहती । इसका कारण ? कारण यही है कि एक ही बात बार-बार स्मृति में लाते हैं । जैसे—ईश्वरीय संतान बनते ही सबको नशा चढ़ता है कि "हमें तो भगवान मिल गये," "पाना था सो पा लिया", "स्वयं भगवान हमें पढ़ाते हैं"। यह सत्य है, परंतु यदि दस-बीस वर्ष तक कोई यही चिंतन करता रहे तो क्या उसका मुख मीठा होगा ? क्योंकि भगवान तो दस या बीस वर्ष पहले ही मिल चुका था; परंतु इन २० वर्षों में भगवान से हमें क्या मिला—इसका हमें नशा हो। तब हमारा स्वमान स्थाई होगा ।

जैसे मान लो एक बच्चा किसी बड़े मिल-मालिक का लड़का है। तो जब वह बच्चा है—उसे यह नशा रहता है कि हम साहूकार हैं, और बड़ा होने पर उसे एहसास होता है कि यह मिल हमारी है, और बड़ा होने पर उसे नशा चढ़ता है कि मैं भी इस मिल का मालिक हूं और जब वह और बड़ा होता है तो वह स्वयं को बाप समान अधिकारी समझने लगता है और वहां जाकर निर्देश देने लगता है।

ठीक इसी प्रकार हमारे भी नशे सूक्ष्म होते चलें । पहले-पहले हमें नशा रहा, "हम मगवान के बन गये।" हम आगे बढ़े तो नशा रहा, "भगवान भी हमारा हो गया।" और आगे बढ़े तो हमें नशा चढ़ा, "भगवान के सम्पूर्ण खजाने हमारे हैं।" और आगे बढ़ते-बढ़ते हमें अपने भविष्य का नशा, सत्य स्वरूप का नशा चढ़ा । अब हमारे नशे और भी सूक्ष्म हों। हम मालिक हैं, हम अधिकारी हैं, हम बाप के समान हैं । जो शक्तियां, जो खज़ाने, जो वरदान किसी को भगवान दे सकता है, वही हम भी दे सकते हैं । भगवान ने अपने समस्त अधिकार हमें भी दे दिये हैं । इस प्रकार सूक्ष्म व नित्य नये स्वमान में रहने से हमारा नशा स्थाई रहेगा।

**"कुछ महत्वपूर्ण ईश्वरीय नशे"**

हम कुछ सूक्ष्म श्रेष्ठ स्मृतियों का यहां वर्णन कर रहे हैं इन्हें गहनता से महसूस करने से स्थिति काफी श्रेष्ठ होगी।

● **"हम भगवान के नयनों के नूर हैं"**—जब भगवान इस सृष्टि पर नजर दौड़ाता है तो उसकी दृष्टि हमारे

# समय की गति

**सरस्वती शर्मा, यमुना विहार., दिल्ली**

यह संगम युग समय की गति बताता जा रहा है।
उठो, देखो, स्वर्ण-युग का सवेरा आ रहा है ।।

नये फिर कल्प का नवयुग, नई पृथ्वी, नया अम्बर।
नया पावन अलौकिक तेज़, लेकर आ रहा है।यह संगम..

यही है ब्राह्मी वेला, यहां सोना ही खोना है।
जगो, संभलो, जगत्पति शिव जगाता आ रहा है।।यह संगम..

जिसे खोजा, पुकारा और पूजा एक अर्से से।
वही भगवान फिर सतयुग रचाता आ रहा है।।यह संगम..

रचयिता तीन लोकों का, जो हर्त्ता दुख, शोकों का।
वह ज्योतिर्बिंदु दलितों को उठाता जा रहा है।।यह संगम..

विकारों से गये हारे, दुखी बेबस जो बेचारे।
उन्हीं पतितों को फिर पावन बनाता जा रहा है।यह संगम..

हुये जो क्षीण शक्ति में, भटकते थे जो भक्ति में।
उन्हें सद्ज्ञान-अमृत शिव पिलाता जा रहा है।। यह संगम..

नहीं तन, आत्मा तुम हो, अमर हो बिंदु अभिनेता।
स्व-दर्शन चक्रधारी यों बनाता जा रहा है। यह संगम..

जो पावन पूज्य सतयुग में, हुये पामाल कलियुग में।
वह सृष्टि मंच के पट सब उठाता जा रहा है।। यह संगम..

मनुज से देवता, नारी से लक्ष्मी, नर से नारायण।
गदाओं को शहंशाही दिलाता जा रहा है।।यह संगम... □

ऊपर पड़ता है । हम भगवान की नज़रों में हैं । हम भगवान को भी अतिप्रिय हैं।

**●हम जहान के नूर हैं**—हम पवित्र आत्माओं की उपस्थिति इस धरा पर उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि मनुष्य जीवन में आंखों की । जैसे यदि आंख न हो तो जहान अंधकार है । वैसे ही यदि इस धरा पर हम न हों तो ये धरा भी वीरान हो जाए ।

**●हम विश्व के आधार हैं**—"हम हंसेंगे तो जग हंसेगा।" हम अपने इस महान् स्वमान में रहें । हमारी स्थिति से सम्पूर्ण जग प्रभावित होता है । हमारी आनंदित स्थिति सबको आनंदित करेगी । परंतु यदि हम ही गमों में होंगे तो संसार से गमों के काले बादलों को भला कौन हटा पायेगा।

**●हम कल्प वृक्ष की जड़े हैं**—हमारे द्वारा ही समस्त आत्माओं को बल प्राप्त होता है । हम जो कुछ भी सोचते हैं, वह प्रवाह कोटी-कोटी मनुष्यों तक पहुंचता है। इस प्रकार हम ही विश्व के पालनहार हैं ।

**●हम बाप समान हैं**—हम भगवान के योग्य, महान् व समर्थ बच्चे हैं अर्थात् अब उसी के समान हैं । यह सूक्ष्म नशा हमें सम्पूर्णतया उसके समान बना देगा ।

**●हम भक्तों के इष्ट हैं**—हम वही हैं जिनका भक्त मंदिरों में आहवान कर रहे हैं, हमसे भक्त वरदान मांग रहे हैं । और हम उनकी सर्व-मनोकामनाएं पूर्ण भी कर रहे हैं ।

**●हम प्रकृति के भी मालिक हैं**—प्रकृति पति परमपिता की हम समर्थ रचना, प्रकृति के मालिक हैं । यदि इस सूक्ष्म नशे में हम स्थित रहेंगे तो प्रकृति भी हमारे आदेशों का पालन करेगी ।

**●हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं**—हम सर्वशक्तियों के अधिकारी हैं । हमारे आहवान पर ये हमारी सेवा में उपस्थित रहेगी । यह सूक्ष्म एहसास हमें शक्तिशाली होने का आभास देगा । इस प्रकार हम अपनी संकल्प शक्ति से कमजोर आत्माओं को सहारा दे सकते हैं ।

**●हम पवित्रता के सूर्य हैं**—जैसे आकाश में स्थित सूर्य की किरणों से समस्त विश्व विभिन्न प्रकार की शक्तियां ग्रहण कर रहा है, उसकी गर्मी से अनेक प्रकार के विषैले कीटाणु नष्ट हो रहे हैं, उसका प्रकाश जीवन आधार है । वैसे ही हम योगी व पवित्र आत्माएं इस धरा पर सूर्य तुल्य हैं । हमारी किरणों से समस्त विश्व से माया के कीटाणु नष्ट होते हैं । हमारे प्रकाश से जग प्रकाशित होता है । ये नशा हमें सम्पूर्ण पवित्र बनायेगा । ये अपवित्र आत्माएं तो टिमटिमाते हुए छोटे-छोटे दीपक हैं । ये दीपक भला मुझ सूर्य को कैसे प्रभावित कर सकते हैं ।

**●हम जैसा भाग्यशाली कोई नहीं...हम भाग्य विधाता हैं**—स्वयं भाग्य-निर्माता हमारे हाथ में आया है । उसने हमें भी भाग्य-विधाता बना दिया है । हम किसी के भी भाग्य की रेखा खींच सकते हैं । हमसे अधिक भाग्यशाली चारों युगों में कोई भी नहीं होता । हमारे भाग्य की महिमा में शास्त्र भरे पड़े हैं।

**●विश्व की सबसे बड़ी सत्ता हमारे साथ है**—स्वयं सर्वशक्तिवान हमारा साथी है । वह सदा ही हज़ारों भुजाओं सहित हमारी मदद को तैयार है । तब भला हमें भय किसका... हमें चिंता किसकी... हम जो चाहें कर सकते हैं।

**●हम विश्व की पूर्वज आत्माएं हैं**—हम सर्वशक्तिवान से जुड़े हैं और समस्त विश्व हमसे जुड़ा है । हमसे शक्तियों का प्रवाह सम्पूर्ण विश्व को जा रहा है। हम दाता हैं, सदा देने वाले । लेने का संकल्प भी हम नहीं कर सकते ।

इस प्रकार प्रतिदिन एक ईश्वरीय नशे की बात लेकर ५ मिनट उस पर चिंतन करने से हम सहज ही स्वमान में स्थित हो जाएंगे । जबकि भगवान स्वयं हमें सम्मान दे रहा है तो हम भला स्वयं को सम्मान क्यों न दें । ऐसे स्वमान में रहने वाली आत्मा सहज ही सर्व का सम्मान प्राप्त कर लेती है । स्वमान का अभाव अभिमान जागृत करता है । और अभिमानी व्यक्ति को सदा ही सम्मान की प्यास लगी रहती है, परंतु उसे कहीं भी सम्मान नहीं मिलता । स्वमान में स्थित आत्मा को तो भगवान भी सम्मान देता है, फिर भला समस्त विश्व उसे सम्मान क्यों नहीं देगा । और फिर प्रकृति, जिसका वह मालिक बन जाता है, स्वत: ही उसे सर्वस्व प्रदान करती है। उसे संपति की प्राप्ति के लिए प्रकृति के पीछे भागना नहीं पड़ता ।

तो आओ, सहज सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए स्वमान में स्थित हो जाएं । यही स्वमान हमारी दिव्यता है । इस स्वमान में स्थित होकर हम समस्त विश्व में उसी तरह चमकेंगे, जिस तरह अंधकार में चांद-तारे । इस स्वमान में स्थित होकर हम इस धरा पर उपस्थित ज्ञान सूर्य को सहज ही प्रत्यक्ष कर सकेंगे । स्वमान ही हमें विघ्नों की अविद्या करायेगा और मनोबल प्रदान कर जीवन को सरल बनायेगा। □

# "यदि आप सदा जीवन में आगे बढ़ना चाहते हो तो"

□ब्र.कु. आत्म प्रकाश., आबू पर्वत

योग-पथ पर प्रत्येक मनुष्य उन्नति करना चाहता है। अनेक बार कई प्रयत्न करने पर भी मनुष्य स्वयं को आगे नहीं बढ़ा पाता । उसे यह पता नहीं चलता कि उसके मार्ग में या विचारधाराओं में क्या रोड़े हैं । वह अनेक उपाय करता है और अंत में थककर हथियार डाल देता है । यहां कुछ मुख्य बातों का उल्लेख किया गया है जिससे पुरुषार्थी यह भी जान सकता है कि वह कहां गलती कर रहा है और उसे आगे बढ़ने के लिए भी स्पष्ट रास्ता नजर आने लगता है।

●पुरुषार्थी के जीवन में आलस्य सबसे बड़ा विघ्न है। आलस्य का बीज पहले मन में अंकुरित होता है । मनुष्य सोचता है "कर लेंगे, "कौन कर रहा है ?" फिर तन के रूप में यह व्याग्र रूप धारण करके मस्तिष्क को सुस्त व कमजोर कर देता है । फलस्वरूप मन, तपस्या में स्थिर नहीं हो पाता । आलस्यवश मनुष्य यही सोचता है कि "कल कर लूंगा, "कल से शुरू करूंगा।" और यह कल, लम्बे काल को समाप्त कर देता है इसलिए इसको त्यागना परमावश्यक है।

●**कभी न भूलो**—कि तुम यहां किसलिए आये हो, तुम बाबा के किसलिए बने हो, तुमने अपने अनमोल जीवन को किसलिए बलिहार किया है—सम्पूर्ण पवित्र बनने के लिए । अगर मन में जरा भी अपवित्रता होगी तो, न स्वयं में आत्म-विश्वास रहेगा और न ही निर्भयता । सदा स्वयं को हीन व कमजोर महसूस करोगे ।

●सदा मन में सभी के प्रति शुभभावना हो । शुभभावना अपने व दूसरों के चित्त को शीतल रखती है । पवित्र आत्माओं के शुभभावनाओं में बहुत बड़ी शक्ति होती है। दूसरों के प्रति शुभभावनाएं, उनकी जिज्ञासा व ग्रहण-शक्ति को बढ़ा देती है। शुभभावनाएं ही हम संगठन को एकता में रख सकते हैं ।

●सदा हमारे वचन मीठे हों। प्यार के सागर के बच्चों के लिए कटुवचन बोलना अभद्रता है । किसी के दिल को कटुवचन रूपी तीर से घायल करने वाला कभी भी सच्चे सुख का अधिकारी नहीं बन सकता । कटुवचन वाला अपने कर्मों पर तथा सेवा पर पानी फेर देता है । वातावरण को दूषित करता है, संगठन को तोड़कर पाप का खाता बढ़ाता रहता है।

●सेवा क्षेत्र में सदा याद रहे कि यह सेवा किसलिए है और किसकी है ? सेवा से हमें भी सच्चा सुख मिले—यह तब होता है जब सेवा सच्चे मन से की जाती है। सेवा करके यह भी संकल्प न हो कि मैंने इतना किया, यह सबको पता होना चाहिए, मेरा नाम होना चाहिए । इससे तो सेवा का बल समाप्त हो जाता है। सेवा का बल है—सेवा के बाद आंतरिक खुशी, योग में सरलता का अनुभव और मन में महान् संकल्पों का प्रवाह ।

●प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान का मनन करें। मनन से मन आनंदित रहता है । मनन से मन की सुषुप्त शक्तियां जग जाती हैं अर्थात् मन को उसकी शक्तियों का आभास होता है, इससे मनोबल बढ़ता है । मनन के अभाव से ही आत्मा खुशी में नहीं रहती, उससे उदासी व निराशा आती है जिससे मनोबल घटता है ।

●सदा श्रेष्ठ संकल्पों की पूंजी बढ़ाते रहें क्योंकि यह सबसे बड़ा खजाना है । श्रेष्ठ संकल्पों से भरपूर आत्मा ही सदा योगमुक्त रह सकती है। जिसके पास श्रेष्ठ संकल्पों की पूंजी है वह सहज ही विघ्न-विनाशक बन जाता है।

●कभी भी साहस और हिम्मत कम न होने दें। क्योंकि इससे ही कठिन कार्य को सरल बनाया जा सकता है। इस दुनिया में साहस से बढ़कर कोई दूसरा हथियार नहीं । हिम्मतवान बच्चों को मदद देने के लिए बाप बंधा हुआ है ।

●परिस्थितिया आने पर कभी भी बुद्धि को विचलित न होने दें । जितनी जो महान् आत्मा होगी, उसे उतना ही परिस्थितियो से लड़ना पड़ेगा । परंतु उसके ज्ञान-योग के हथियार इतने मजबूत होंगे कि परिस्थितियां उसके मन को परेशान नहीं कर सकेंगी । परिस्थितियां निश्चित ही आत्मा को बलवान बनाती हैं ।

●टकराव होने पर हर बात में "मेरी गलती कहां है" यह देखें, न कि दूसरों के ही दोष निकालते रहें।

●जिम्मेदारी सम्भालने के गुण को अपनाएं। जिम्मेदारी मनुष्य को महान् व चुस्त बनाने में मदद करती है। जिम्मेदारी से कार्य करने वाला मनुष्य सहज ही सबके स्नेह को जीत लेता है तथा प्रत्येक मनुष्य उसे सहयोग देने के लिए तत्पर रहता है। साथ-साथ जिम्मेदारी मनुष्य में कर्मठता के गुण को भी जागृत

करती है। अत: ईश्वरीय राह पर उन्नति को पाने वालों को जो भी कार्य सौंपा जाए उसे पूर्ण ज़िम्मेदारी से करें।

●सदा ईश्वरीय नशे में मस्त रहें। इसी रूहानी मस्ती से हमें उमंग और उल्हास के पंख प्राप्त होते हैं जिससे सदा उड़ती कला का अनुभव होने लगता है। इसलिए सदा डबल लाइट रहें। ज़िम्मेदारी का बोझ शिवबाबा को देकर स्वयं को लाइट रखें। ऐसी सदा डबल लाइट रहने वाली आत्माएं ही लाइट हाउस बनती हैं।

●सदा दूसरों के सम्मान को जागृत करके आगे बढ़ाते रहें। जो दूसरों को आगे बढ़ाते हैं, दूसरों को अवसर देते हैं, उन्हें भगवान आगे बढ़ाता है। जो दूसरों को पीछे हटाना अर्थात् गिराना चाहता है, उन्हें गिरने से कोई बचा नहीं सकता।

●विघ्न आने पर उसके कारणों के व्यर्थ चिंतन में न जाकर समाधान की सोचो। इससे संकल्प-शक्ति एकाग्र रहेगी। वास्तव में हमनें ही विघ्नों को चैलेंज किया है, उनका आह्वान किया है, खुशी से उनसे युद्ध करो और सरलता की शक्ति से विघ्नों को जीतो। ये विघ्न ही हमें प्रत्यक्ष करेंगे। सबकी चिंता करने वाला तुम्हारी चिंता कर रहा है। तुम मग्न होंगे उसकी याद में, तो विघ्न तुम्हें छू भी नहीं सकेंगे।

●दूसरों का प्यारा बनने का पुरुषार्थ नहीं करें लेकिन न्यारा बनने का पुरुषार्थ करते रहें। क्योंकि किसी के प्रभाव में आने से हमारे भाव उस आत्मा के प्रति बदलते हैं। इस बेहद नाटक के हरेक पार्टधारी का पार्ट साक्षी होकर देखें और स्वयं को भी विशेष पार्टधारी समझकर पार्ट बजाएं।

●इस जीवन की यात्रा में तो सभी चल रहे हैं परंतु तुम्हारी यात्रा में कुछ अनोखापन हो। हम किसी का अनुसरण न करें बल्कि हमारा हर कदम विश्व के लिए अनुकरणीय हो। जीवन की इस लम्बी यात्रा में खुशी और आनंद से चलना सीखो और अपने साथियों में भी उमंग भरते चलो।

●कभी भी बड़ों-से या छोटों-से व्यर्थ की बहस न करें। क्योंकि इससे दूसरों की भावनाएं हमारे प्रति बदल जाती हैं।

●दूसरों पर कटाक्ष करने का संस्कार न हो।

●ज़िद्दी स्वभाव भी न हो, यह भी आगे बढ़ने में महान् रोड़ा है।

●**याद रखो**—जीवन के क्षण पुनरावृत्त नहीं होंगे और अंत में कुछ भी हाथ न लगेगा। इसलिए विनाशी तृष्णाओं के पीछे अपने "भाग्य-निर्माण के काल" को मत समाप्त करो। समय को मूल्य देने वाला ही मूल्यवान बनता है।

वास्तव में जो आत्माएं खुदा को दोस्त के रूप में अनुभव करके वफादारी से सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाकर उस एक से दोस्ती निभाते हुए, उसके ही महिमा के गीत गाते-गुनगुनाते अनोखी मस्ती से इस यात्रा में सदा आगे बढ़ते जा रहे हैं, वो ही निर्विघ्न सम्पूर्णता की मंज़िल पर विजय का झंडा फहराने में सफल होंगे। □

## गीता-के-भगवान् के अवतरण का समय

**ले० ब्रह्माकुमारी विमला, आगरा**

सभी इस बात को मानेंगे कि जब कोई अच्छा डाक्टर आता है और ठीक इलाज करता है तो बीमारी भाग जाती है। जब अच्छा और शक्तिशाली कोतवाल या थानेदार आता है तो चोर भाग जाता है। जब प्रकाश आता है तो अन्धकार भाग जाता है। जब ज्ञान आता है तो अज्ञान भाग जाता है। अत: आप सोचिये कि जब धर्म की स्थापनार्थ गीता-के-भगवान् का अवतरण हुआ तो क्या अधर्म इस संसार से भाग न गया होगा ? जब उस ज्ञान सागर परमपिता एवं सद्गुरु का शुभागमन हुआ तो यहाँ अज्ञानांधकार का विनाश न हो गया होगा? उस सर्वशक्तिमान एवं पतित-पावन भगवान् के दिव्य कर्त्तव्य के बाद काम, क्रोध आदि चोर क्या भाग न गये होंगे ? उस शान्ति-दाता एवं सुखदाता, दु:ख-हर्त्ता एवं पावनकारी पिता के पधारने के बाद क्या यहाँ दु:ख, अशान्ति और अपवित्रता क्या इस संसार से मिट न गये होंगे ? आपका विवेक कहेगा कि गीता-के-भगवान् के अवतरण के बाद अवश्य ही धर्म, पवित्रता और सुख-शान्ति का युग अर्थात सतयुग शुरू हुआ होगा। अत: स्पष्ट है कि भगवान् का अवतरण द्वापर युग के अन्त में मानना और उसके बाद कलियुग अर्थात अपवित्रता, दु:ख तथा अशान्ति के युग का प्रारम्भ मानना भूल है। भगवान् का अवतरण कलियुग के अन्तिम चरण में अर्थात संगम युग में मानना ही युक्ति-युक्त है क्योंकि उसके बाद ही पवित्रता-सुख-शान्ति सम्पन्न सतयुग का प्रारम्भ होता है।

# "प्रगति का बाधक-भय"

ब्र.कु. 'मीनाक्षी', गुना

ईश्वर की सर्वोत्तम रचना मानव है। वह सर्वशक्ति और गुणों का भंडार सबमें बड़ा विवेकवान है परंतु मानव को हराने वाला एक उससे भी बड़ा शत्रु या दैत्य है 'भय' जिसने उसे बहुत परेशान किया है क्योंकि इस भय के भूत या दैत्य के वश होते ही मानव अपनी शक्ति को भूल मैदान छोड़कर भाग खड़ा होता, उसका व्यवहार एक बच्चे के समान हो जाता । वह होशोहवाश भी खो बैठता । आश्चर्य की बात है कि मानव का निर्माण विश्व पर शासन करने के लिए हुआ है पर भय मानव पर शासन करके उसे नचा रहा है । इसके आते ही मानव निष्क्रिय, विवश होता जाता । यह भय ही सर्व रोगों, कलह-क्लेशों सभी समस्याओं की जननी है, यही मनुष्य की हार का मुख्य कारण है । प्रगति के साधना में सबसे बड़ा कंटक, बाधक है ! तो भय क्या है ?

यह अज्ञानता का सबसे बड़ा रूप है और अपने-आप ही मन विचारों-कल्पनाओं द्वारा इस दैत्य की रचना करता । यह अनुमान, कल्पना शक्ति का वह रूप है जो है तो स्वप्नवत् या छाया रूप परंतु इसमें रस्सी को सांप बनाने की, राई को पहाड़ बनाने की, चूहे को शेर बनाने की, बिल्ली को चोर बनाने की, छाया को दानव बनाने की बड़ी शक्ति है, तो आइए इस स्वजनित रचना जो रचयिता के हर कार्य में कैसे बाधक है, इस पर विचार करें।

आकाशवाणी से जैसा प्रसारण होता सभी सब-स्टेशन वैसा प्रसारण करते । ठीक इसी प्रकार मन बहुत बड़ा प्रसारण केंद्र है, वह जैसा सोचता वैसे ही शरीर की कर्म-इंद्रियां, सभी शरीर के कोष्ठ काम करते हैं । फिर सम्बंध, सम्पर्क, पदार्थ वातावरण को प्रभावित करते हैं, यही बड़ी सूक्ष्म बात है । यदि मन प्रसन्नता, साहस, आत्मविश्वास भरा संदेश सोचता है, प्रसारित करता तो मनुष्य में उमंग, उत्साह, उल्लास, आनंद, चुस्ती-फुर्ती का वातावरण देखने में आता । पर मन यदि उत्साहहीन, निराशायुक्त, असफलता का, शंका वाला संदेश देता, इंद्रियां वैसा ही करतीं । फलस्वरूप मनुष्य में आलस्य, सुस्ती, शंका, चिंता, उत्साहहीनता का वातावरण देखने में आता । इसलिए कहा गया है जैसा मनुष्य सोचता है वैसा बन जाता है। जैसे आप भोजन कर रहे हैं आप सोचते इससे तो मेरा पाचन बिगड़ जायेगा तो आपका यही संकल्प पाचन बिगाड़ देगा क्योंकि आपने निश्चिंत होकर कार्य नहीं किया । परंतु जो मिले उसे प्यार-से स्वीकार करो, प्रभुप्रसाद समझकर, फिर तो अहित हो ही नहीं सकता । मीरा की मिसाल है विष भी अमृत बना । परंतु भय से किया कार्य जिस बात की आशंका होती वही कर दिखाता । जैसे बच्चा स्कूल गया, मां सोचती पता नहीं देर से क्यों आ रहा है, कहीं कोई पकड़ न ले गया हो या किसी के नीचे पिस न जाये, आदि, तो वह अपना मन भी खराब करती तो न चाहते भी वो अहित का काम करने के लिए प्रेरित करती । परंतु शुभ सोचे कि चलो आ रहा होगा, कोई दोस्त के पास गया होगा, तो शायद वह अशुभ से बच सके ।

भयानक या अशुभ असहनीय बात का हमारे पाचन से बड़ा सम्बंध है—ऐसा समाचार सुनते ही हमारी भूख-प्यास खत्म हो जाती, बुखार, चक्कर, घबराहट बढ़ जाती । यह भय कि अब क्या होगा ? यह क्या हो गया, ही उसे परास्त कर देता, पर जो हुआ सो हुआ, हर बात में कल्याण है या मेरे ही कर्मों का फल है । वही होगा जो मंजूरे खुदा है। यह परीक्षा ही प्रभु इच्छा है—ऐसे पाजिटिव विचारों द्वारा वह अपने को सम्भाल सकता है ।

पर यह भय मनुष्य की नींद तक को मिटा देता है क्योंकि भय फुर्सत और रात्रि में ज्यादा सताता, अकेलापन ही उसकी उत्पत्ति का कारण है । मेरा कोई नहीं, मुझमें कोई योग्यता नहीं, उल्टा सोचता है, प्रभु सर्वशक्तिवान को भूल जाता तथा अनिंद्रा, चिंता का शिकार हो जाता । मनुष्य जब स्थूल कार्य व्यवहार करके खाली होता तो मन की कल्पनाशक्ति बढ़ जाती है । कार्य में तो बिज़ी रहता है । तो ध्यान रहे ऐसे समय भय को अपने अंदर न घुसने दें, शुभ-संकल्प ही इस भय को दूर करने की दवा है। क्योंकि हम जिस आशंका से डरते वही होता है, हमारे अपने ही संशयात्मक संकल्प विनाश के कारण बनते तथा संशय बुद्धि विनश्यन्ति। कहीं ऐसा न हो जाए, ऐसा हो गया तो यह... यह शब्द हमारी शक्ति को क्षीण करता है । यह भय आत्मा के साथ तन का भी शत्रु है । यह शरीर तो क्षीण करता ही है पर आपके समय, धन को भी व्यर्थ सोचने में गंवाता है । अतः ध्रुव, प्रह्लाद के मुआफिक ईश्वर पर विश्वास कर भय को प्रवेश न करने दें।

अत: हम कह सकते हैं कि भय से जीवन दुखपूर्ण बनता, कार्य, लगन नष्ट होती, जीवन का आनंद फीका हो जाता, आयु घट जाती क्योंकि कहते हैं कि निर्भय व्यक्ति तो एक बार मरता है पर डरपोक दिन में कई बार मरता । भय प्रगति मार्ग का सबसे बड़ा कंटक है । अशुद्ध संकल्पों की जननी है । यह सब-कुछ होते भी निर्बल और निर्धन बना देता ।

इसे दूर करने के लिए आत्मविश्वास और साहस—इन रचनात्मक शक्तियों का विकास जरूरी है क्योंकि भय और चिंता निषेधात्मक प्रवृत्ति है और मानव मन में एकसाथ यह दोनों नहीं रह सकते । शेक्सपियर ने कहा है—साहसी अवसर के अनुरूप ही ऊंचा उठ जाता है इसलिए अपनी सोचने की शक्ति बदलिए । ''आप जैसा चाहते हैं वैसा सोचिए''—सदा विचारें।

चाहे परिस्थितियां कितनी भी प्रतिकूल हों, वातावरण कितना भी विषैला हो, जीवन कितना भी कष्ट-कंटकों से भरा हो, राह कितनी भी पथरीली हो पर यह मत भूलो कि तुम सर्वशक्तिवान की संतान हो, तुम महान हो, बहुत विराट, विशाल हृदय वाले हो । परिस्थितियां तुच्छ हैं । तुम उन्हें बदल सकते हो । इस तरह अगर तुम मन के तूफानों को वश करो तो बाहर के तूफान तुम्हारा अहित नहीं कर सकते । अत: कह सकते हैं कि निश्चय बुद्धि ही भय पर विजय पा सकते हैं इसके लिए ईश्वरीय विचार हैं कि निश्चय वालों में सदा यह भी निश्चय होगा कि विजय निश्चित है । सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है—तो वह निश्चिंत भी रहेगा। अपनी विजय में संशय अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही है। कहा जाता है ''हिम्मते मर्दां, मददे खुदा।'' ध्यान रहे—

जो व्यक्ति साहस नहीं छोड़ता वह कभी हार नहीं खाता, ईश्वर भी उसकी मदद करता और मनुष्य का मूल्य भी उत्साह और साहस—दो पंखों से आंका जाता है तथा आज नहीं तो कल उसका महत्व विश्व-विजेता रूप में अवश्य होता । □

# आओ खेल खेलें

लेखक:—ब्रह्माकुमार रामप्रसाद बैतूल, म.प्र.

ऊपर नीचे आगे पीछे, दो शब्द ही भरना है ।
खेल नहीं समझो इसे, ऐसा तुमको बनना है।।

छोटी-सी ये बुद्धि परीक्षा।
जो भर दे वो बने फरिश्ता।।

| | | |
|---|---|---|
| | दे | |
| दे | व | ता |
| | ता | |

जो भी खाली स्थान है।
सारे एक समान हैं।।

तीन अक्षर का मेल कराता ये गीता का ज्ञान है।
समझो बूझो बनो महान् कहते शिव भगवान है।।

नोट:—''व'' शब्द बीच में लिखा रहेगा २ खाली स्थान है जो समान है उनमें एक खाली स्थान में ''दे'' और एक स्थान में ''ता'' आयेगा । फिर वह ''देवता'' बन जायेगा। □

देहली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं लाला जगदीश नारायण गुप्ता जी।

वर्धा सेवाकेंद्र की ओर से देहली में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता रामदास नगराध्यक्ष जी कर रहे हैं ।

# अमृत छोड़, विष काहे को खाये ?

आज काम, क्रोध, लोभ आदि से तो सभी मनुष्यात्माएँ पीड़ित हैं। क्या डॉक्टर, क्या मरीज, क्या स्वास्थ्य मंत्री और क्या समाज-सेवक, क्या साधु क्या साधक सभी इन आत्मिक रोगों के पुराने कैदी हैं। परन्तु एक बड़ा रोग तो सभी को यह लगा हुआ है कि वे इस रोग को रोग ही नहीं समझते अथवा इसकी ओर ध्यान ही नहीं देते ! या तो वे इसे 'असाध्य रोग' कहकर छोड़ देते हैं या वे कहते हैं कि—"यह रोग नहीं हैं, यह तो मनुष्य के मौलिक स्वभाव में शामिल हैं और इन्हें हटाने से ही रोग होने की सम्भावना है !" देखा जाय तो वास्तव में ऐसा कहने वाले ही अधिक रोगी हैं।

अन्य कई लोग इन रोगों के इलाज के विचार से कुछ दौड़-धूप करते भी हैं। वे पूजा करते, वेद-शास्त्र पढ़ते, हठयोग का अभ्यास करते, यात्राओं पर जाते, कर्म-काण्ड, यज्ञ आदि करते हैं और जन्म-जन्मान्तर से करते ही आए हैं। परन्तु उससे उनके ये रोग तो गये ही नहीं बल्कि उनके चार्ट से मालूम होता है कि उनमें काम, क्रोध आदि सभी १००% हैं अर्थात् अधिक ही बढ़ते आये हैं। कारण यही है कि जो कुछ वे करते आये हैं, वह इन रोगों की दवा ही नहीं है और उन्हें देने वाले स्वयं भी इनसे १००% निवृत्त नहीं थे। हठ से विकार नहीं हटते, तप से ताप नहीं जाते, पूजा से पूज्य और पावन नहीं बनते, वेद से भेद नहीं मिटते, यात्रा से दिव्य गुणों की मात्रा नहीं बढ़ती, कर्म-काण्ड से क्लेश-काण्ड सदा के लिए नहीं टलते। अतः गीता में भगवान् के महावाक्य हैं कि—'हे वत्स, मैं यज्ञ, तप, कर्म-काण्ड आदि से नहीं मिलता हूँ'। वास्तव में बीमार डॉक्टर से दवाई लेनी ही नहीं चाहिये, यह औषधि-विज्ञान का नियम है। अतः अब परमपिता परमात्मा शिव, जो ही एकमात्र पूर्ण एवं सदा पवित्र हैं, अवतरित होकर ज्ञानामृत दे रहे हैं। वह माताओं को ज्ञानमृत का कलश देकर उन द्वारा नर-नारियों के ये महारोग मिटा रहे हैं। अब नर-नारियों को चाहिये कि वे यह ज्ञानामृत पियें। अब इस अमृत को छोड़, विष को पीना महा मूर्खों का काम है। भगवान् कहते हैं—"अब जब मैं अमृत दे रहा हूँ तो विष काहे को खाते हो ?"

**पवित्र बनो ! योगी बनो !**

# आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र.कु. सत्यनारायण तथा ब्र.कु. लक्ष्मण, कृष्णानगर द्वारा संकलन

**अमृतसर:** नवरात्रों के अवसर पर अमृतसर में प्रसिद्ध मंदिर एवं तीर्थ स्थान दुर्गायाना मंदिर में देवियों की झांकी एवं विश्वशांति प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भाई गोपीचंद भाटिया जी ने किया । इस अवसर पर शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी पधारे थे । इसके अलावा महाशांति पद-यात्रियों का स्वागत अपने संग्रहालय के बाहर बड़ा सुंदर गेट बनाकर किया गया । भ्राता सुनील दत्त जी को ईश्वरीय भेंट भी दी गयी । शहर के डैमगंज एरिया एवं गुरुबक्श नगर में प्रदर्शनी द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश दिया गया। □

**चुनार (मिर्जापुर):** समाचार मिला है कि वाराणसी और मिर्जापुर के बीचोंबीच स्थित ऐतिहासिक नगर चुनार में स्थाई सेवाकेंद्र स्थापन किया गया है । इस शुभ अवसर पर नगर में शोभा-यात्रा बड़े धूमधाम से निकाली गई । इसके अलावा सेवाकेंद्र पर ही सार्वजनिक कार्यक्रम भी रखा गया । इस अवसर पर भारतीय जीवन बीमा निगम के ब्रांच मैनेजर भ्राता डी.एन. चौबेजी तथा नगर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे । चुनार स्थानीय कचहरी के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई । तहसीलदार भ्राता लाल बहादुर सिंह जी तथा तहसील के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने इस प्रदर्शनी को देखकर लाभ उठाया । नवरात्रों पर संतोषी माता के मंदिर, हनुमान जी के मंदिर तथा शीतला माता के मंदिर में भी प्रदर्शनी लगाकर ईश्वरीय संदेश दिया गया । □

**नान्देड़** सेवाकेंद्र की ओर से लोहा गांव में तीन दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई । इसं प्रदर्शनी द्वारा लोहा तथा आसपास के कई ग्राम-निवासियों को शिवबाबा का संदेश मिला । इसके अलावा तीन दिन योग शिविर और तीन दिन ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया, परिणामस्वरूप वहां स्थाई सेवाकेंद्र खुल गया है। □

**रायपुर:** रायपुर सेवाकेंद्र की ओर से धनेली ग्राम में 'शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी का उद्घाटन ग्राम के सरपंच भ्राता वर्मा जी ने किया । इस अवसर पर ग्राम के अन्य गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे । इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा तथा ज्ञान लाभ प्राप्त किया। □

**पणजी गोवा:** सेवाकेंद्र पर ब्राज़ील के बी.के. केन भाई तथा डॉ. प्रशांत जी के पधारने पर यहां पर बहुत अच्छी सेवा हुई । यहां के मैंटल हास्पिटल में, लायंस क्लब में तथा अन्य स्थानों पर प्रवचन हुए । पिलार चर्च में एक हाईस्कूल में राजयोग विषय पर काफी चर्चा हुई । आकाशवाणी द्वारा तथा 'नवहिंद टाइम्स' पेपर के द्वारा भी ईश्वरीय सेवा हुई । इसके अलावा अनेक गांवों व मंदिरों में स्लाईड्स-शो किये गये । □

**पोरबन्दर:** समाचार मिला है कि सेवाकेंद्र के पास दिलिप ग्राउंड में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई । जिसको कई हजारों आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया, इसके अलावा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन में ब्रह्माकुमारी बहनों का प्रवचन हुआ । राम नवमी के उपलक्ष्य में माधवपुर गांव के मेले में प्रदर्शनी लगाई गई। हनुमान जयंती के अवसर पर हनुमान मंदिर में प्रदर्शनी द्वारा भक्तों को ईश्वरीय संदेश दिया गया। □

**बैतूल:** समाचार मिला है कि शांति सम्मेलन समारोह में नौ देवियों की झांकी का उद्घाटन तथा नये भवन निर्माण स्थल का भूमि पूजन माननीय विधायक भ्राता अशोक सावले द्वारा सम्पन्न हुआ । समारोह के मुख्य अतिथि भ्राता विनोद कुमार डागा ने इस अवसर पर अपने सुंदर विचार जनता के समक्ष प्रगट किये। इस प्रोग्राम द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। □

**अम्बाला कैंट** सेवाकेंद्र की ओर से मुलाना में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी के समापन के अवसर पर एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें भाषण, गीत, ड्रामा आदि का कार्यक्रम हुआ । इस प्रोग्राम द्वारा बहुत लोगों को ईश्वरीय संदेश मिला। □

**दार्जिलिंग** सेवाकेंद्र की ओर से जलपाईगुडी में एक प्रोग्राम चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा हुई। राजयोग शिविर द्वारा अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। □

**दिल्ली (अशोक विहार)** सेवाकेंद्र की ओर से दो प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया । यह प्रदर्शनियां अशोक विहार के विभिन्न इलाके में लगाई गई। इन प्रदर्शनियों द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। इस मौके पर राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। □

**बड़ौदा** सेवाकेंद्र की ओर से दत्त अपार्टमेंट में हुई त्रि-दिवसीय ज्ञान शिविर तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया । इस राजयोग शिविर द्वारा करीब साठ भाई-बहनों ने लाभ उठाया । इसके अलावा मृत्यु प्रसंग पर दो प्रवचन हुए । चुनाव में विजयी मेयर और डिप्टी मेयर को अभिनंदन पत्र लिखा गया । आकाशवाणी अहमदाबाद व बड़ौदा से विशेष प्रवचन प्रसारित किये गये। □

**नारायणगढ़ (नेपाल)** समाचार मिला है कि जनकपुर धाम् में जनकपुर सिगरेट फैक्टरी के अंदर लाइब्रेरी हाल में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रीय पंचायत की सदस्य माननीय बहन शारदा मल्ल जी ने किया । विशेष समारोह में सिगरेट फैक्टरी के (ए.जी.एम.) भ्राता अंजनी कुमार सिंह जी सभापति थे । आप प्रदर्शनी को देखकर बहुत प्रभावित हुए । अनेक फैक्टरी के डॉयरेक्टरों व ऑफिसरों ने प्रदर्शनी को देखकर लाभ उठाया । इसके अलावा नारायणगढ़, हेटोडा, जनकपुर तथा वीरगंज के सेंटरों पर मुख्य व्यक्तियों का स्नेह-मिलन रखा गया। □

**जामनगर:** समाचार मिला है कि जामनगर में एक महायज्ञ का आयोजन हुआ जिसके समापन समारोह में ब्र.कु. बहनों को भी निमंत्रण मिला । बहनों ने परमपिता परमात्मा का परिचय सभी को दिया । इसके अलावा टाउन हाल में सर्वधर्म समभाव सम्मेलन में भी ब्र.कु. बहनों को निमंत्रण मिला । ब्र.कु. बहनों ने इस अवसर पर भी परमपिता परमात्मा का परिचय सभी लोगों को दिया। □

**मणिनगर (अहमदाबाद)** सेवाकेंद्र की ओर से सिंधी भाई-बहनों की विशेष सेवा हुई । चेटीचंद के भव्य महोत्सव के अवसर पर विशाल शोभा-यात्रा में ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय की तरफ से दो झांकियों का आयोजन किया गया था । इन झांकियों को गोल्ड मेडल मिला । इस अवसर पर गुजरात राज्य के गर्वनर आर.के. त्रिवेदी जी तथा शहर के मेयर जयेंद्र भाई जी की भी अच्छी सेवा हुई। इसके अलावा सिंधी समाज के कई मंडलों में ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रवचन हुए। □

**भिलाई नगर** सेवाकेंद्र द्वारा नवनिर्मित भवन के प्रांगण में विश्वशांति आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया । इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि भ्राता के.आर. संगमेश्वरन, प्रबंध निर्देशक भिलाई इस्पात संयत्र थे। इस सम्मेलन से लगभग १००० आत्माएं लाभांवित हुईं । सम्मेलन के पश्चात् त्रि-दिवसीय योग शिविर आयोजित किया गया जिसमें ४० आत्माओं ने शिवबाबा का संदेश प्राप्त किया। □

**हाथरस** सेवाकेंद्र द्वारा ग्राम फीरोजपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया । इस प्रदर्शनी में करीब दस गांव के लोग सम्मिलित हुए । प्रदर्शनी का उद्घाटन ग्राम के प्रधान जी द्वारा सम्पन्न हुआ । अनेक आत्माओं ने इस प्रदर्शनी को देखा तथा लाभ उठाया। □

**चांदनी चौक (दिल्ली)** सेवाकेंद्र की ओर से सीताराम बाजार पंचायती धर्मशाला में एक सप्ताह के लिए राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन धर्मशाला के प्रेजीडेंट लाला जगदीश नारायण गुप्ता जी ने किया । धर्मशाला के सभी कार्यकर्ताओं व मेंबरों ने तथा जनता ने इस प्रदर्शनी को देखा तथा लाभ उठाया। □

**जोरहाट:** सेवाकेंद्र की ओर से गोलाघाट नामक स्थान पर चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसको लगभग ४००० आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया । राजयोग शिविर द्वारा भी अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया । इसके अलावा स्कूलों में भी प्रवचन हुए । जेल में भी कैदियों की सेवा हुई । स्वामी वेद व्यासानंद जी के आगमन पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सेवा हुई। नागालैंड में दीमापुर नामक स्थान पर मंदिरों में प्रदर्शनियों द्वारा कई हजार आत्माओं की सेवा हुई। □

**बीकानेर** सेवाकेंद्र की तरफ से नवरात्रों के उपलक्ष्य में ग्राम उदयरामसर में विश्व-नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं चैतन्य देवियों की झांकी का आयोजन किया गया। इसको हजारों आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया । राजयोग शिविर द्वारा अनेक प्रतिष्ठित आत्माओं ने लाभ उठाया। माताओं के विशेष सतसंग में आसपास की माताओं ने लाभ उठाया। □

बटाला में विश्वशांति पदयात्रा में पधारे हुए महाराज सत्यमित्रानंद जी का स्वागत करती हुई ब्र.कु. सरला तथा गीता जी।

**उत्तर:**— मीठे बच्चे:—खुदा और खिदमत को साथ-साथ याद रखो तो मेहनत से सदा के लिए छूट जायेंगे।

दिल्ली (हरिनगर)- सेवाकेन्द्र की ओर से नवरात्रों का त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया गया । नवरात्रों के अंतिम तीन दिन सप्तमी, अष्टमी एवं रामनवमी को चैतन्य नवदुर्गा की झांकी केंद्र के पार्क में लगाई गई। साथ-साथ देवियों का रहस्य कार्यक्रम भी रखा गया । जिसमें देवियों का रहस्य, रामनवमी का रहस्य स्पष्ट किया गया। उस चैतन्य झांकी को देखकर, देवियों का रहस्य तथा रामनवमी का रहस्य जानकर लोग बहुत प्रभावित हुए । झांकी के साथ-साथ तीनों दिन तक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिससे भी बहुत लोगों ने लाभ उठाया । इस प्रोग्राम में भाग लेने के लिए दिल्ली साउथ डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस (आई) के महासचिव तथा स्थानीय प्रसिद्ध सामाजिक नेता भ्राता मदनलाल पाहवा तथा उनके साथ कई अन्य स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों ने भी ईश्वरीय सेवा से लाभ उठाया। □

**उदयपुर:** समाचार मिला है कि दादी जानकी जी के राजस्थान के दौरे पर आने पर उदयपुर वासियों की अच्छी सेवा हुई । समाचार पत्रों में भी विशेष समाचार प्रकाशित हुआ । कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात हुई । इस तरह शिवबाबा का परिचय अनेक आत्माओं को मिला। □

**सिरसी (कनार्टक):** सेवाकेंद्र द्वारा एक सम्मेलन रखा गया । विषय था—"उपनिषद, कुर्रान, बाइबल और गीता का विश्व के भविष्य के बारे में अभिमत।" इसका उद्घाटन श्री श्री अम्बिका नंद स्वामी जी रामकृष्ण आश्रम कारवार ने किया । अतिथि श्री परमेश्वर स्वामी जी थे । अध्यक्षता सिविल जज सिरसी ने की । सर्वधर्म के अनुयायियों ने कहा कि अब यह कलियुग का अंतिम समय है । धर्म की अत्यंत ग्लानि हो चुकी है । भगवान के कार्य की महिमा बताते हुए, सभी को ईश्वर का पैगाम सुनाया गया। □

**बैंगलोर (वी.वी. पुरम):** सेवाकेंद्र की ओर से आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था । इस प्रदर्शनी को लगभग १००० आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया । इसके अलावा (ई.एस.आई.) हास्पिटल में स्वास्थ्य कल्याण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी को डॉक्टर्स और नर्सों के अलावा हजारों लोगों ने लाभ उठाया । बैंगलोर में कनार्टक सरकार द्वारा एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में भ्राता जगदीश जी को भी निमंत्रण मिला था । आपने अपने प्रवचन में चरित्र उत्थान पर जोर दिया और बतलाया कि राजयोग द्वारा ही नैतिकता और चरित्र का उत्थान सम्भव है। भ्राता जगदीश जी के बैंगलोर पधारने पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सेवा हुई। □

**नयागंज (कानपुर):** समाचार मिला है कि मिश्रिख जिला सीतापुर में विशाल मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व राजयोग शिविर का आयोजन किया गया । मेले में आये हुए करीब ४ हजार आत्माओं ने प्रदर्शनी देखी तथा ८० आत्माओं ने योग शिविर किया । इसके अलावा मेला गोकरणनाथ में भी प्रदर्शनी व राजयोग शिविर द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा हुई। □

**नवरंगपुर** सेवाकेंद्र की ओर से जयपटना में एक आध्यात्मिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया था । जिसका उद्घाटन जयपटना की महारानी अनरूपा मंजरी जी ने किया । राज परिवार के १०-१२ सदस्य आये थे, उन्हें ईश्वरीय संदेश दिया गया। □

**दिल्ली (पांडव भवन):** सेवाकेंद्र की ओर से न्यू रोहतक रोड पर कम्युनिटी सेंटर में एक सप्ताह के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन भ्राता बंशीलाल चौहान मैट्रोपोलिटन काउंसलर (स्वास्थ्य विभाग) ने किया । इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा । राजयोग शिविर द्वारा लगभग ५० आत्माओं ने लाभ उठाया । प्रदर्शनी के अंतिम दिवस पर समापन समारोह भी रखा गया जिसमें दादी हृदयमोहिनी जी ने ईश्वरीय ज्ञान-योग के कुछ गुह्य अनुभव सबके सामने रखे और सभी को प्रसाद दिया गया। □

**जयपुर (राजापार्क):** समाचार मिला है कि जगह-जगह पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी आयोजित की गई । श्याम नगर नई कालोनी में तीन दिन के लिए प्रदर्शनी लगाई गई। इसके साथ ही चैतन्य दुर्गा की झांकी भी सजाई गई। मालवीय नगर शिव मंदिर में प्रदर्शनी एवं प्रवचन का प्रोग्राम रखा गया । सेवाकेंद्र पर ही सर्व-आत्माओं का पिता की झांकी तथा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस झांकी व प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता बी. राम, आई.ए.एस. ने किया । इन कार्यक्रमों द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला । □

**उज्जैन** सेवाकेंद्र की ओर से समाचार मिला है कि महिला दिवस पर त्रिमूर्ति शिक्षण समिति और त्रिमूर्ति महिला मंडल के संयुक्त तत्वाधान में हायर सेकेंड्री की छात्राओं के बीच वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनों को भी विशेष बुलाया गया था । इसके अलावा मदर टेरेसा के उज्जैन नगर आगमन पर स्वागत समारोह में ब्र.कु. बहनों को भी बुलाया गया था । बहनों ने मदर टेरेसा का स्वागत किया तथा सर्व-आत्माओं का पिता का चित्र भेंट किया । कैथोलिक चर्च में भी बहनों को बुलाकर सम्मानित किया गया। □

**दिल्ली (पालम):** सेवाकेंद्र की ओर से सेवाकेंद्र के अंदर और बाहर के प्रांगण में बड़ी विशाल प्रदर्शनी एक सप्ताह के लिए लगाई गई थी । जिससे ५००० लोगों ने लाभ उठाया। साथ में योग शिविर भी रखा गया । □

**होशंगाबाद:** सेवाकेंद्र की ओर से पंचमढ़ी पहाड़ी स्टेशन पर ईश्वरीय संदेश देने के लिए एक सार्वजनिक समारोह का आयोजन किया गया । भ्राता शम्भू जी, अध्यक्ष गायत्री शांति पीठ, त्रिपाठी जी प्रमुख मठाधीश एवं प्रो. पाण्डे जी, गौतम जी प्राचार्य जी अनेक गणमान्य नागरिकों ने उपस्थित होकर समारोह की शोभा बढ़ाई। भ्राता महेन्द्र जी, ब्र.कु.अवधेश जी आदि भी इस शुभ अवसर पर पधारे थे। □

**कटक (तेलंगा बाजार):** समाचार मिला है कि कसदी हरीराजपुर में विश्व-नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अलावा इंजीनियरिंग स्कूल के कांफ्रेंस हाल में प्रदर्शनी के चित्रों को प्रोजेक्टर-शो द्वारा दिखाया गया तथा प्रवचन भी हुए । इस प्रोग्राम द्वारा अनेक विद्यार्थियों ने लाभ उठाया । महिला स्नेह-मिलन का आयोजन किया गया । इस अवसर पर बहन रम्मा देवी जी पधारी थीं।

## पहेली हल करो तो जानें... ?

**—ब्र.कु. प्रेम सागर, लक्ष्मी नगर, देहली**

सामने हम एक ३६ खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं। जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं, पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ और तीसरा काला । अब आपको सफेद वाले खाने में सही उत्तर भरना है, जिसमें हमने एक-से लेकर दस तक नम्बर दिए हुए हैं । उसके लिए हम आपको अंत में बापदादा द्वारा उच्चारे हुए महावाक्यों का एक समूह दे रहे हैं । यह समूह भी दस पंक्तियों का है । अब आपको करना क्या है, प्रत्येक सफेद खाने वाले नम्बर में आपको उसी नम्बर की पंक्ति वाले वाक्य से एक शब्द चुनकर उस खाने में भर देना है । उदाहरणार्थ एक नम्बर वाले खाने में एक नम्बर की पंक्ति से एक शब्द, इसी प्रकार दूसरे वाले खाने में दूसरे नम्बर की पंक्ति से, आगे इसी तरह... दस तक भरिए । जिससे अंत में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात् कोई-न-कोई बापदादा द्वारा दिया गया धारणायुक्त सलोगन मिलेगा । ये सलोगन लगभग १६ शब्दों का होगा, जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात् अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए, जो कि इसी अंक में कहीं पर दिया हुआ होगा । इस पहेली को हल करने के लिए निर्धारित समय १० मिनट।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मीठे | | बच्चे | | 1 | |
| | और | | 2 | | को |
| | 3 | | साथ | | 4 |
| रखो | | 5 | | 6 | |
| | से | | 7 | | 8 |
| लिए | | 9 | | 10 | |

**(महावाक्यों का समूह)**

(१) मेरे लाड़ले बच्चो कभी भी खुदा बाप से जुदा मत होना।

(२) क्योंकि कल्प में एक बार ही बाप आते हैं तुम बच्चों की खिदमत करने !

(३) इसलिए सदा अपने को खुदा बाप के साथ समझना, अकेले नहीं।

(४) जितना-जितना तुम एक बाप की याद में रहोगे।

(५) तो तुम्हारी आत्मा से विकारों की खाद निकलती जायेगी।

(६) परंतु उसके लिए थोड़ी मेहनत तो करनी पड़ेगी ना !

(७) इसलिए सदा एक बाप को ही याद करने की प्रेक्टिस करनी है।

(८) तुम बच्चों को सिवाए एक बाप के याद करने और कोई तकलीफ है नहीं।

(९) सिर्फ इस एक ही मेहनत के करने से तुम अनेक प्रकार की मेहनत से छूट जाओगे ।

(१०) फिर जब तुम सतोप्रधान बन जायेंगे तो बाप के साथ बाप के घर चलेंगे। □

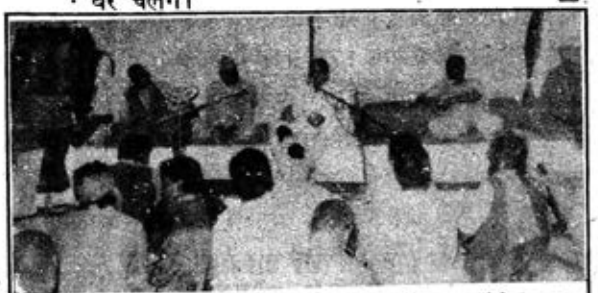

**हरिद्वार** में चेतन देव आश्रम में हुए संत सम्मेलन में भाषण करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता जी।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, प्रकाशक तथा सम्पादक ने 'ओमशांति प्रेस' बी-7/27, कृष्णानगर, देहली-51 से छपाया। मुख्य सम्पादक ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा
Regd. No. 10563/65-D. (E)—70